Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 36

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

14 मुहर्रम 1442 हिजरी कमरी 3 तबूक़ 1399 हिजरी शमसी 3 सितम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

इन्सानी दिल भी हज्रे अस्वद की तरह है और इसका सीना बैतुल्लाह से समानता रखता है। मक्का मुअज़्ज़मा के बुतों का सर्वनाश उस समय हुआ था जब कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार कुद्दूसियों की जमाअत के साथ वहां गए थे। अत: अल्लाह के अतिरिक्त बुतों की शिकस्त और उनको समाप्त करने के लिए ज़रूरी है कि उन पर इसी तरह से चढ़ाई की जाए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन्सान का सीना बैतुल्लाह है और दिल हज्रे असवद

यह बात ध्यान पूर्वक याद रखो कि जैसे बैतुल्लाह में हज्रे अस्वद पड़ा हो है इसी तरह दिल सीना में पड़ा हुआ है। बैतुल्लाह पर भी एक ज़माना आया था कि कुफ़्फ़ार ने वहां बुत रख दिए थे। संभव था कि बैतुल्लाह पर यह ज़माना न आता परन्तु नहीं। अल्लाह ने इस को एक उदाहरण के रूप में रखा। इन्सानी दिल भी हज्रे अस्वद की तरह है और इस का सीना बैतुल्लाह से समानता रखता है। अल्लाह के अतिरिक्त विचार वे बुत हैं जो इस काबा में रखे गए हैं। मक्का मुअज़्ज़मा के बुतों का सर्वनाश उस समय हुआ था जब कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार कुद्दूसियों की जमाअत के साथ वहां गए थे और मक्का फ़तह हो गया था। इन दस हज़ार सहाबा को पहली किताबों में फिरश्ते लिखा है और हक़ीक़त में उनकी शान फरिश्तों जैसी ही थी। इन्सानी शक्तियां भी एक तरह फिरश्ता ही का स्थान रखती हैं क्योंकि जैसे फरिश्ते की यह शान है कि يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ (अलनहल:51) इसी तरह इन्सानी शक्तियों की विशेषता है कि जो हुक्म उनको दिया जाए उस का पालन करते हैं। ऐसा ही समस्त शक्तियां और अंग इन्सान के आदेश के अधीन हैं। अत: अल्लाह के अतिरिक्त बुतों की शिकस्त और उनको समाप्त करने के लिए ज़रूरी है कि उन पर इसी तरह से चढ़ाई की जाए। यह लश्कर तज़्किया नफ़्स से तैयार होता है और इसी को फ़तह दी जाती है जो तज़्किया करता है अत: क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا (अश्शम्स:10) हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर हृदय का सुधार हो जाए तो समस्त शरीर का सुधार हो जाता है। और यह कैसी सच्ची बात है आँख,कान, हाथ, पांव, ज़बान इत्यादि जितने अंग हैं वे वास्तव में हृदय के ही फ़तवा का अनुकरण करते हैं। एक ख़्याल आता है फिर वे जिस अंग के बारे में हो वह शीघ्र उसके पालन के लिए तैयार हो जाता है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 172 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

फज्र और इशा की नमाज़ की बरकतें

हज़रत अबू हुरैरह रज़ी अल्लाह अन्हों से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

मुनाफ़िक़ों पर फ़ज्र और इशा की नमाज़ से ज़्यादा बोझल और कोई नमाज़ नहीं और यदि वे जानते कि उनमें क्या सवाब है तो वे इन नमाज़ों में आते यद्यपि घुटनों के बल घिसटते हुए ही। मेरे दिल में आया कि मैं मुअज़्ज़न से कहूं कि वह नमाज़ के लिए इक़ामत की तकबीर कहे। फिर मैं एक व्यक्ति से कहूं कि वह लोगों की इमामत करे। फिर मैं अँगारे लूं और उनके मकानों को आग लगा दूं जो अभी तक नमाज़ के लिए नहीं निकले।

(सही बुख़ारी, बाब फ़ज़लुल इशा फिल जमाअत)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

फरिश्ते तुम में से प्रत्येत के लिए जब तक कि वह अपनी जाए नमाज़ में है, रहमत की दुआ करते रहते हैं शर्त यह है कि वह बिना वज़ू के न हो जाए। (फरिश्ते कहते हैं) कि हे अल्लाह! इसे माफ़ कर दे। हे अल्लाह! इस पर रहम कर। तुम में से एक व्यक्ति नमाज़ ही में होता है जब तक कि नमाज़ के कारण से वह रुका रहे। सिवाए नमाज़ के और किसी बात ने इस को अपने घरवालों की तरफ़ लौटने से न रोका हो

(सही बुख़ारी , बाब मन जुलस फिल मस्जिदे यन्तज़ेओ अस्सलात व फ़ज़लुल मसाजिद

कुरआन का यह दावा है कि इस में वे सब सच्चाइयां मौजूद हैं जो पहली सब किताबों में पाई जाती हैं

"وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ .... सूरत अलबक़रह आयत नम्बर 84 की तफ़सीर में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि

"बावजूद इन आदेशों के यहूद उनकी परवाह नहीं करते थे और उनके सुलूक अपनों और बेगानों से ख़राब हो रहे थे। यहां तक कि उनमें से कुछ हज़रत उज़ैर को इब्नुल्लाह (अल्लाह का पुत्र) क़रार देने लग गए थे। जैसा कि यहूद का सदूक़ी सम्प्रदाय जो यमन की तरफ़ रहता था इस शिर्क में गिर चुका था और कुछ अपने उल्मा के हर एक हुक्म को इलाही वह्य के तौर पर मानते और अपनी किताब के आदेशों को सम्मान न देते। अनाथों और दरिद्रों के साथ उनका व्यवहार बहुत बुरा था। और मानव जाति के साथ हमदर्दी उनके अन्दर नाम मात्र भी न थी। इबादतों में सुस्त और ज़कात देने से जी चुराते थे। जैसे आजकल के मुसलमान एक तरफ़ तो अपने आपको मुसलमान कहते हैं और दूसरी तरफ़ वे समस्त बातें जो यहूद के बारे में ख़ुदा तआला ने वर्णन फ़रमाई हैं उनमें भी पाई जाती हैं। यहूद से तो सिर्फ यह वादा लिया गया था कि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी की इबादत न करना। लेकिन मुसलमानों पर ख़ुदा तआला ने इतना फ़ज़ल किया कि इस्लाम की बुनियाद ही उसने لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पर रखी। अर्थात इस बात पर कि ख़ुदा के सिवा कोई उपास्य नहीं वह सम्पूर्ण सामर्थ्य वाला है।

शेष पृष्ठ 11 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि से जंगे उहद के अवसर पर फ़रमाया था कि मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा हों तीर चलाते जाओ। हे भरपूर नौजवान! तू तीर चलाते जाओ।

इस्लाम के आरम्भ में ईमान लाने वाले, मक्की दौर में तकालीफ़ बर्दाश्त करने वाले, नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पहरेदारी का सौभाग्य पाने वाले, इस्लाम धर्म और ख़िलाफ़त की ग़ैरत रखने वाले, दुआएं स्वीकार होने वाले , इराक़ के फातिह, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी

हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

पाँच मरहूमीन आदरणीया बुश्रा अकरम साहिबा पत्नी मुहम्मद अक़रम बाजवा साहिब (नाज़िर तालीमुल कुरआन वक्फे आरिज़ी रव्वाह), आदरणीय इक़बाल अहमद नासिर साहिब पीरकोटी, आदरणीया ग़ुलाम फ़ातिमा फ़हमीदा साहिबा पत्नी मुहम्मद इब्राहीम साहिब आफ़ दूल्याह जट्टां ज़िला कोटली कश्मीर,आदरणीय मुहम्मद अहमद अनवर साहिब हैदराबादी और आदरणीय सलीम हुस्न अलजाबी साहिब आफ़ सीरिया का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 जुलाई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत सअद रज़ि का वर्णन चल रहा था। हज़रत सअद रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंगे बदर, उहद, ख़ंदक़, हुदैबिया, ख़ैबर, फ़तह मक्का सहित समस्त जंगों में शिरकत फ़रमाई। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेहतरीन तीर-अंदाज़ सहाबा में से थे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3, पृष्ठ 105 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

हज़रत सअद रज़ि के बारे में एक रिवायत में वर्णन हुआ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो जंगें लड़ीं उनमें से एक जंग में एक वक़्त में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सिवाए हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत सअद रज़ि के कोई न रहा।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल सहाबा बाब फ़ज़ाइल तलहा व ज़ुबैर 2415)

हज़रत सअद रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंगों के लिए निकलने की हालत का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग के लिए निकलते थे और हालत यह थी कि हमारे पास खाने की कोई चीज़ न होती सिवाए दरख़्तों के पत्ते ही। हमारी यह हालत थी कि हम में से हर एक इस तरह मेंगनियां करता जैसे ऊंट लीद करता है या बकरियां मेंगनियां करती हैं अर्थात ख़ुशक, उनमें नर्मी बिल्कुल नहीं होती थी। एक दूसरी रिवायत में है कि आप वर्णन करते हैं कि इन दिनों में हमारी ख़ुराक बबूल के वृक्ष, यह एक किस्म का काँटेदार वृक्ष होता है इस की बेलें हुआ करती थीं।

(सही बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाब अन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब मनाक़िब सअद बिन अबी वक़ास हदीस नम्बर 3728)

(जामे तिर्मिज़ी अबवाब अज़्ज़हद बाब मा जाअ फ़ी मईश अस्हाब उन्नबी सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम हदीस नम्बर 2366)

हज़रत सअद रज़ि वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अल्लाह की राह में ख़ून बहाया और आप वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अल्लाह की राह में तीर चलाया और यह घटना सरिया हज़रत उबैदा बिन हारिस की है।

(सुनन इब्न माजा किताबुस्सना बाब फ़ज़ल सअद बिन अबी वक़ास, हदीस नम्बर 131) (अल्इस्तेआब फ़ी मारफ़ितस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 607 दार अलजैल बेरूत)(उसदुल ग़ाबः फ़ी माअरफितस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 453 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

इसका विस्तार यह है कि रबी उलअव्वल सन दो हिज्री में एक जंग हुई जिसे सरिया हज़रत उबैदा बिन हारिस कहते हैं। इसका वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखा है, यह पहले भी कुछ हिस्सा बल्कि मेरा विचार है सारा मैं वर्णन कर चुका हूँ लेकिन बहरहाल यहां भी उनके हवाले से वर्णन कर देता हूँ।

रबीउल अव्वल के महीने के शुरू में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने एक क़रीबी रिश्तेदार उबैदा बिन हारिस मुतलबी की इमारत में साठ घुड़सवार या ऊंट सवार मुहाजिरीन का एक दस्ता रवाना किया। इस मुहिम का उद्देश्य क़ुरैश मक्का के हमलों को पहले रोकना था। अत: जब उबैदा बिन हारिस और उनके साथी कुछ दूरी तय कर के सनीयतुल मर्रा मक्का और मदीना के मध्य एक स्थान का नाम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना हिजरत करते हुए इस स्थान से गुज़रे थे। बहरहाल जब यह इस स्थान के पास पहुंचे तो अचानक क्या देखते हैं कि क़ुरैश के 200 हथियार लगाए नौजवान इकरमा बिन अबुजहल की कमान में डेरा डाले पड़े हैं। दोनों पक्ष एक दूसरे के सामने हुए और एक दूसरे के मुक़ाबला में कुछ तीर-अंदाज़ी भी हुई लेकिन फिर मुशरिकीन का गिरोह यह ख़ौफ़ खाकर कि मुसलमानों के पीछे कुछ सहायता छुपी न हो उनके मुक़ाबला से पीछे हट गया और मुसलमानों ने उनका पीछा नहीं किया। अलबत्ता मुशरिकीन के लश्कर में से 2 व्यक्ति हज़रत मिक़दाद बिन अमरो और हज़रत उत्बा् बिन ग़ज़वान इक़रमा बिन अबुजहल की कमान से ख़ुद भाग कर मुसलमानों के साथ आ मिले और लिखा है कि वे इसी उद्देश्य से क़ुरैश के साथ निकले थे कि मौक़ा पाकर मुसलमानों में आ मिलें। क्योंकि वे दिल से मुसलमान थे परन्तु अपनी कमज़ोरी के कारण से क़ुरैश से डरते हुए हिज्रत नहीं करते थे।

(मुअजमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 99-100 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत) (उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 328)

जमादी अल्ऊला 2 हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सअद बिन अबी वक़ास रज़ि को आठ मुहाजिरीन के एक दस्ता पर अमीर निर्धारित फ़रमाकर क़ुरैश की ख़बर लाने के लिए ख़र्रार स्थान की तरफ़ रवाना फ़रमाया। ख़र्रार भी हिजाज़ में जुहफा के क़रीब एक इलाक़ा है। बहरहाल ये लोग वहां गए परन्तु दुश्मन से उनका सामना नहीं हुआ।

(मुअजमुल बुलदान भाग 2, पृष्ठ 400 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 329-330)

फिर सरिया हज़रत अबदुल्लाह बिन जहश रज़ि का वर्णन है जो जमादी अल-आख़िर दो हिज्री में हुआ था। इस जंग में हज़रत सअद रज़ि भी शामिल हुए थे और इसका भी वर्णन में पहले एक बार कर चुका हूँ लेकिन 'सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन 'के हवाले से यहां संक्षिप्त वर्णन कर देता हूँ।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह इरादा फ़रमाया कि क़ुरैश की हरकतों का अधिक क़रीब से होकर ज्ञान प्राप्त किया जाए ताकि उनके बारे में हर प्रकार की ज़रूरी सूचना बरवक़्त उपलब्ध हो जाए और मदीना हर प्रकार के अचानक होने वाले हमलों से सुरक्षित रहे। अत: इस उद्देश्य से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ मुहाजरीन की एक दल तैयार किया और मस्लिहतन इस

दल में ऐसे आदमियों को रखा जो क़ुरैश के विभिन्न क़बीलों से सम्बन्ध रखते थे ताकि क़ुरैश के छुपे इरादों के बारे में ख़बर प्राप्त करने में आसानी हो और इस दल पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने फूफेरे भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श को अमीर निर्धारित फ़रमाया। आप ने इस सरिया को रवाना करते हुए इस सरिया के अमीर को भी यह नहीं बताया कि तुम्हें कहाँ और किस उद्देश्य से भेजा जा रहा है बल्कि चलते हुए उनके हाथ में एक महर रगा हुआ ख़त दिया, sealed ख़त था और फ़रमाया कि इस ख़त में तुम्हारे लिए हिदायतें लिखी हैं। जब तुम मदीना से दो दिन का सफ़र तय कर लो तो फिर इस ख़त को खोल कर इसकी हिदायतों के अनुसार अनुकरण करना। बहरहाल आख़िर दो दिन की दूरी के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान को, इस ख़त को खोल कर देखा तो इस में यह शब्द लिखे थे कि तुम मक्का और ताइफ के बीच वादी नख़ला जाओ और वहां जाकर क़ुरैश के हालात का पता लो और फिर हमें सूचना कर दो। आप ने ख़त के नीचे यह हिदायत भी लिखी थी कि इस मिशन के मालूम होने के बाद अगर तुम्हारा कोई साथी इस पार्टी में शामिल रहने से शंकित हो और वापस चला आना चाहे तो उसे वापस आने की आज्ञा दे दो। अब्दुल्लाह ने आप की यह हिदायत अपने साथियों को दी और सब ने एक ज़बान होकर कहा कि हम ख़ुशी के साथ इस सेवा के लिए हाज़िर हैं। कोई वापस नहीं जाएगा। इसके बाद यह जमाअत वादी नख़ला की तरफ़ रवाना हुई।

रास्ते में सअद बिन अबी वक़ास रज़ि और उत्बा बिन ग़ज़वान का ऊंट कहीं खो गया और वह उस को तलाश करते करते अपने साथियों से बिछड़ गए और बावजूद बहुत तलाश के उन्हें न मिल सका। ये जो आठ आदमियों की पार्टी थी अब बाक़ी ये सिर्फ़ छः रह गए। ये चलते रहे। इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने एक मुस्तश्रिक़ मिस्टर मार्गोलिस का वर्णन किया है कि वह अपनी रिवायत के अनुसार शंकाए पैदा करने के लिए हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि और उनके साथी के बारे में लिखता है कि

सअद बिन अबी वक़ास रज़ि और उत्बहा रज़ि ने जानबूझ कर अपना ऊंट छोड़ दिया था और इस बहाने से पीछे रह गए थे। इन इस्लाम पर जान कुर्बान करने वालों पर, जिनकी ज़िन्दगी की एक एक घटना उनकी बहादुरी और फ़दाईत पर गवाह है और जिन में से एक जंग बअरे मऊना में कुफ़्फ़ार के हाथों शहीद हुआ और दूसरा कई ख़तरनाक जंगों में नुमायां हिस्सा लेकर अन्त में इराक़ का फ़ातिह बना, इस प्रकार की शंका करना और शंका भी केवल अपने मन घड़त विचारों के आधार पर करना यह मिस्टर मार्गोलेस ही का हिस्सा है। और फिर मज़ा यह है कि मार्गोलैस साहिब अपनी किताब में यह दावा करते हैं कि मैंने यह किताब हर तरह के द्वेष से दूर होकर लिखी है।

बहरहाल मुसलमानों की यह छोटी सी जमाअत नख़ला पहुंची और मालूमात जो लेनी थीं उनके लिए अपने काम में मसरूफ़ हो गई और उनमें से कुछ ने राज़ को छुपाने के लिए अपने सिर के बाल मुंडवा दिए ताकि मुसाफिर इत्यादि उनको उमरे के ख़्याल से आए हुए लोग समझ कर किसी प्रकार की शंका न करें। लेकिन अभी उनको वहां पहुंचे अधिक अरसा नहीं गुज़रा था कि अचानक वहां क़ुरैश का एक छोटा सा क़ाफ़िला आ पहुंचा जो ताइफ से मक्का की तरफ़ जा रहा था और हर दो जमाअतें एक दूसरे के सामने हो गईं और हालात ऐसे बन गए कि न चाहते हुए भी मुसलमानों ने आख़िर अपनी इच्छा के ख़िलाफ़ यही फ़ैसला किया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश भी यही था लेकिन हालात की वजह से यही फ़ैसला किया कि क़ाफ़िले पर हमला करके या तो क़ाफ़िला वालों को क़ैद कर लिया जाए या मार दिया जाए। अतः उन्होंने अल्लाह का नाम लेकर हमला कर दिया जिसके नतीजा में कुफ़्फ़ार का एक आदमी मारा गया और दो आदमी क़ैद हो गए लेकिन बदक़िस्मती से चौथा आदमी भाग कर निकल गया और मुसलमान उसे पकड़ न सके और इस तरह उनकी यह स्कीम कामयाब होते होते रह गई। बहरहाल इसके बाद मुसलमानों ने क़ाफ़िला के सामान पर क़ब्ज़ा कर लिया और क़ैदी और ग़नीमत का सामान लेकर जल्दी मदीना की तरफ़ वापस लौट आए लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब यह इलम हुआ कि सहाबा ने क़ाफ़िले पर हमला किया था तो आप सख़्त नाराज़ हुए और फ़रमाया

مَا اَمَرْتُكُمْ بِقِتَالٍ فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ

कि मैंने तुम्हें हुर्मत वाले शहर में लड़ने की आज्ञा नहीं दी थी और आपने माल ग़नीमत लेने से इनकार कर दिया। दूसरी तरफ़ क़ुरैश ने भी शोर मचा दिया कि मुसलमानों ने शहर एहराम की हुर्मत को तोड़ा है और बड़ा शोर मचाया इसलिए भी कि जो आदमी मारा गया था वह उम्रो बिन हज़रमी था। यह एक बहुत बड़ा रईस था। बहरहाल इस दौरान में उनके आदमी, कुफ़्फ़ार के आदमी अपने दो क़ैदियों को छुड़ाने के लिए मदीना भी पहुंच गए लेकिन चूँकि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि और हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वान वापस नहीं आए थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके बारे में सख़्त चिन्ता में थे, चिन्ता थी कि अगर क़ुरैश के हाथ वे पड़ गए तो क़ुरैश उन्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी वापसी तक क़ैदियों को छोड़ने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि मेरे आदमी ख़ैरीयत के साथ मदीना पहुंच जाऐंगे तो फिर मैं तुम्हारे आदमियों को छोड़ दूँगा। अतः वे दोनों वापस पहुंच गए तो आप ने दोनों क़ैदियों को छोड़ दिया। इन दो में से एक आदमी पर मदीना के रहने का ऐसा प्रभाव हुआ कि वह मुसलमान हो गया और बेअरे मऊना के अवसर पर शहीद हुआ।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 330 से 334)

जंग बदर के अवसर पर जंग से पहले के हालात वर्णन करते हुए भी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में यह लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेज़ी के साथ बदर की तरफ़ बढ़ने शुरू हुए और जब आप बदर के निकट पहुंचे तो किसी विचार के अधीन जिसका वर्णन रिवायतों में नहीं है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ को अपने पीछे सवार करके इस्लामी लश्कर से कुछ आगे निकल गए। उस वक़्त आप को रस्ते में एक बूढ़ा बदवी मिला जिससे आप को बातों बातों में यह पता चला कि इस वक़्त क़ुरैश का लश्कर बदर के बिल्कुल पास पहुंचा हुआ है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह ख़बर सुनकर वापस तशरीफ़ ले आए और हज़रत अली रज़ि ,हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि और हज़रत सइद बिन अबी वक़ास रज़ि को हालत का पता लगाने के लिए आगे रवाना फ़रमाया। जब ये लोग बदर की वादी में गए तो अचानक क्या देखते हैं कि मक्का के कुछ लोग एक चश्मा से पानी भर रहे हैं। इन सहाबियों ने इस जमाअत पर हमला करके उनमें से एक हब्शी ग़ुलाम को पकड़ लिया और उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आए। आप ने नर्मी से इस से पूछा कि लश्कर इस वक़्त कहाँ है? उसने जवाब दिया इस सामने वाले टीले के पीछे है। आप ने पूछा कि लश्कर में कितने आदमी हैं। उसने कहा बहुत हैं परन्तु पूरी संख्या मुझे मालूम नहीं है। आप ने फ़रमाया:अच्छा यह बताओ कि उनके लिए हर-रोज़ कितने ऊंट ज़िब्ह होते हैं। उसने कहा दस होते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा की तरफ़ ध्यान देकर फ़रमाया कि इस लश्कर में एक हज़ार आदमी मालूम होते हैं और वास्तव में वे इतने ही थे।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 355-356)

यह हिस्सा भी शायद कुछ विस्तार से मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ। जंग बदर के अवसर पर हज़रत सअद रज़ि की बहादुरी के बारे में रिवायत मिलती है कि जंग बदर के अवसर पर हज़रत सअद रज़ि पैदल होने के बावजूद घुड़सवारों की तरह बहादुरी से लड़ रहे थे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3, पृष्ठ 104 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

इसी कारण से हज़रत सअद रज़ि को 'फ़ारसुल-इस्लाम कहा जाता था अर्थात इस्लाम का घुड़सवार।

(उम्दतुल क़ारी शरह सही बुख़ारी भाग 1 पृष्ठ 305 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत,2001 ई)

जंग उहद के अवसर पर हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि उन गिनती के कुछ लोगों में से थे जो सख़्त अफ़रा-तफ़री की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास साबित-क़दम रहे।

(उद्धरित ख़ुत्बाते ताहिर तक़रीर जलसा सालाना ख़िलाफ़त से पहले)तक़रीर जलसा सालाना1979- ई पृष्ठ 337)

जंग उहद के अवसर पर हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि का भाई अत्बा बिन अबी वक़ास मुशरिकीन की तरफ़ से जंग में शरीक हुआ था और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला भी किया था। इस घटना को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे ने अपनी एक तक़रीर में इस तरह वर्णन फ़रमाया था कि उत्बा वह हतभागा इन्सान था जिसने सख्त हमला करके हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नीचे के दो मुबारक दांत शहीद

किए और मुबारक चेहरा को सख़्त ज़ख़मी कर दिया। उत्बा के भाई हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि मुसलमानों की तरफ़ से लड़ रहे थे। जब उनको उत्बा की बदबख़्ती का इलम हुआ तो इंतिक़ाम के जोश से उनका सीना खोलने लगा। आप फ़रमाते हैं। उन्होंने कहा कि मैं अपने भाई के क़तल पर ऐसा हो रहा था कि शायद कभी किसी और चीज़ की मुझे ऐसी चाहत न लगी हो। दो बार दुश्मन की सफ़ों का सीना चीर कर उस ज़ालिम की तलाश में निकला कि अपने हाथ से उसके टुकड़े उड़ाकर अपना सीना ठंडा करूँ परन्तु वह मुझे देखकर हमेशा इस तरह कतरा कर निकल जाता था जिस तरह लोमड़ी कतरा जाया करती है। आख़िर जब मैंने तीसरी बार इस तरह घुस जाने का इरादा किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शफ़क़त से मुझसे फ़रमाया कि हे ख़ुदा के बंदे तेरा क्या जान देने का इरादा है? अत: मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रोकने से इस इरादे से रुका रहा।

(उद्धरित ख़ुत्बात ताहिर तक़ारीर जलसा सालाना ख़िलाफ़त से पहले,तक़रीर जलसा सालाना1979- ई पृष्ठ 346)

जंग उहद के अवसर पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास साबित-क़दम सहाबा थोड़े रह गए उस वक़्त हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के बारे में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यूं लिखा है कि

"हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद तीर पकड़ाते जाते थे और हज़रत सअद रज़ि यह तीर दुश्मन पर बे-तहाशा चलाते जाते थे। एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि से फ़रमाया तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों बराबर तीर चलाते जाओ। सअद रज़ि अपनी आख़िरी उम्र तक इन शब्दों को निहायत गर्व के साथ वर्णन किया करते थे।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 495)

एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग उहद के दिन अपने तरकश से तीर निकाल कर मेरे लिए बिखेर दिए और आप ने फ़रमाया तीर चलाओ तुझ पर मेरे माँ बाप फिदा हों।

(सही बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब इज़ा हम्मत ताइफ़तान मिनकुम इन तफ़शला....हदीस नम्बर 4055)

हज़रत अली रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के अतिरिक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कभी किसी के लिए अपने माँ बाप फ़िदा करने की दुआ देते नहीं सुना। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि से जंग उहद के अवसर पर फ़रमाया था कि मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा हों तीर चलाते जाओ। हे भरपूर नौजवान!तू तीर चलाते जाओ

(जामे तिर्मिज़ी किताबुल मनाकिब बाब इरम फ़िदाक अबी व उम्मी हदीस नम्बर 3753)

यहां यह बात भी वर्णन योग्य है, यह नोट भी आया हुआ है कि हज़रत सअद रज़ि के अतिरिक्त तारीख़ में हज़रत ज़ुबेर बिन अवाम रज़ि का नाम भी मिलता है जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

فِدَاكَ اَبِیْ وَاُمِّیْ

तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाब उन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब मनाक़िब अलज़ुबैर बिन अलअवाम हदीस नम्बर 3720)

ग़ज़वा उहद की घटना का वर्णन करते हुए हज़रत सअद रज़ि वर्णन करते हैं कि उहुद के दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए अपने वालदैन को इकट्ठा किया। उन्होंने कहा कि मुशरिकों में से एक आदमी था जिसने मुसलमानों में आग लगा रखी थी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन अर्थात हज़रत सअद रज़ि से फ़रमाया तीर चलाओ तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान। हज़रत सअद रज़ि कहते हैं कि मैंने वह तीर जिसका फल नहीं था उस के पहलू में मारा जिसकी वजह से वह मर गया और उसके कपड़े खुल गए और मैंने देखा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुशी से हंस पड़े।

(सही मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल अलसहाबा बाब फ़ज़ल सअद बिन अबी वक़ास 2412)

एक दूसरी रिवायत में यह घटना यूं वर्णन हुई है कि इस मुशरिक ने (तारीख़ की किताबों में इसका नाम हिब्बान बताया जाता है) एक तीर चलाया जो हज़रत उम्मे एमन के दामन में जा लगा जबकि वह ज़ख़्मियों को पानी पिलाने में व्यस्त थीं। इस पर हिब्बान हँसने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि को एक तीर पेश किया वह तीर हिब्बान के हलक़ में जा लगा और वह पीछे गिर पड़ा जिससे उस का नंगपन ज़ाहिर हो गया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुरा दिए।

(अल-असाबा भाग 3, पृष्ठ 64 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

सही मुस्लिम की जो यह हदीस वर्णन हुई है इसके बारे में वहां जो हमारी नूर फ़ाउंडेशन है उन्होंने अभी जो अनुवाद किया है इस में यह नोट लिखा है और अच्छा नोट है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह ख़ुशी अल्लाह के इस एहसान पर थी कि उसने एक ख़तरनाक दुश्मन को एक ऐसे तीर से रास्ते से हटाया जिसका फल भी नहीं था।

(सही मुस्लिम भाग 13 पृष्ठ 41 प्रकाशक नूर फ़ाउंडेशन)

एक रिवायत में है कि जंग उहद के दिन हज़रत सअद रज़ि ने एक हज़ार तीर बरसाए।

(रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ भाग 2, पृष्ठ 71)

सुलह हुदैबिया के अवसर पर सुलह नामा पर जिन सहाबा ने बतौर गवाह दस्तख़त किए उनमें हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि भी शामिल थे।(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 769)

फ़तह मक्का के अवसर पर हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के पास मुहाजिरीन के तीन झंडों में से एक झंडा था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3, पृष्ठ 105 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990ई)

हज्जतुल विदा के अवसर पर हज़रत सअद रज़ि बीमार हो गए। इसका वर्णन करते हुए हज़रत सअद रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं मक्का में बीमार हो गया और मौत के क़रीब पहुंच गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी अयादत करने मेरे पास तशरीफ़ लाए। मैंने निदेवन किया हे रसूलुल्लाह मेरे पास बहुत अधिक माल है और मेरी वारिस मेरी सिर्फ एक बेटी है तो क्या में दो तिहाई माल सदक़ा कर दूं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं। मैंने निदेवन किया फिर आधा माल सदक़ा कर दूं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं। मैंने निदेवन किया फिर एक तिहाई माल सदक़ा कर दूं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ठीक है परन्तु यह भी बहुत अधिक है। फिर फ़रमाया कि अगर तुम अपनी औलाद को मालदार छोड़ो तो यह इस से बेहतर है कि तुम उन्हें ग़रीब छोड़ दो कि वे लोगों से मांगते फिरें और जो भी तुम ख़र्च करोगे उस का तुम्हें बदला मिलेगा यहां तक कि उस लुक़्मे पर भी जो तुम अपनी बीवी के मुँह में डालते हो। मैंने निदेवन किया हे रसूलुल्लाह !क्या में अपनी हिज्रत में पीछे रह जाऊँगा?आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम पीछे रह भी गए तब भी जो अनुकरण तुम अल्लाह की रजामंदी के लिए करोगे इस से तुम्हारा स्तरा और अधिक बुलंद होगा और साथ यह भी इज़हार फ़र्मा दिया कि मुझे उम्मीद है तुम मेरे बाद ज़िन्दा रहोगे यहां तक कि कौमें तुमसे फ़ायदा उठाएंगी और कुछ लोग नुक़्सान उठाएँगे।

(सही बुख़ारी किताबुल फ़रायज़ बाब मीरासुल बिनात हदीस नम्बर 6733)

एक दूसरी रिवायत में यह है कि इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई कि हे अल्लाह मेरे सहाबा के लिए उनकी हिज्रत पूरी फ़र्मा और उनको उनकी एड़ियों के बल न लौटाना।

(सही बुख़ारी किताबुल जनायज़ बाब रसा उन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सअद बिन खोला हदीस नम्बर 1295)

एक रिवायत में आता है कि हज़रत सअद रज़ि वर्णन करते हैं कि जब मैं बीमार हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी अयादत के लिए तशरीफ़ लाए और पूछा क्या तुमने वसीयत कर दी है। मैंने निदेवन किया जी। आप ने पूछा कितनी? मैंने निदेवन किया मेरा सारा माल अल्लाह की राह में। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा तो अपनी औलाद के लिए क्या छोड़ा है? मैंने निदेवन किया वे मालदार हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। फिर दसवें हिस्से की वसीयत कर दो। हज़रत सअद रज़ि कहते हैं कि मैं इसी तरह कहता रहा और आप इसी तरह फ़रमाते रहे। हज़रत सअद रज़ि अधिक माल सदक़ा करना चाहते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कम करने की नसीहत फ़र्मा

रहे थे यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक तिहाई माल की वसीयत कर दो और एक तिहाई भी बहुत अधिक है।

(सुनन निसाई किताबुल वसाया बाब अल्वसी अस्सुलस हदीस नम्बर 3661)

बहरहाल जो इल्म रखने वाले हैं और फ़िक़्ह वाले भी इस रिवायत से ये इस्तिंबात करते हैं कि एक तिहाई माल से अधिक की वसीयत नहीं हो सकती।

(जामे तिर्मिज़ी अबवाबुल वसाया बाब मा जाअ फ़िलवसी बिस्सुलस हदीस नम्बर 2116)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो इस बारे में वर्णन फ़रमाते हैं कि

"हदीसों भी इस बात का समर्थन करती हैं कि अपने खर्चे निकाल कर बाक़ी सारा माल तक़सीम कर देना इस्लामी आदेश नहीं। अत: रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस तरह फ़रमाते हैं।

يَجِيْءُ اَحَدُكُمْ بِمَالِهٖ كُلِّهٖ يَتَصَدَّقُ بِهٖ وَيَجْلِسُ يَتَكَفَّفُ النَّاسَ اِنَّمَا الصَّدَقَةُ عَنْ ظَهْرِ غِنًى۔

अर्थात तुम में से कुछ लोग अपना सारा माल सदक़ा के लिए ले आते हैं और फिर लोगों के आगे सवाल के लिए हाथ फैला देते हैं। सदक़ा सिर्फ़ अधिक माल से होता है। इसी प्रकार फ़रमाते हैं।

اِنْ تَذَرْ وَرَثَتَكَ اَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ اَنْ تَذَرَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُوْنَ النَّاسَ

अर्थात अगर तू अपने वुरसा को दौलतमन्द छोड़ जाए तो यह अधिक अच्छा है इस की तुलना में कि तू उनको ग़रीब छोड़ जाए और वे लोगों के आगे हाथ फैलाते फिरें। इसी तरह हदीस में आता है कि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दो तिहाई माल के तक़सीम कर देने की आज्ञा चाही परन्तु आप ने उन्हें मना फ़रमाया। फिर उन्होंने आधा माल बांटना चाहा। तो इस से भी मना फ़रमाया। फिर उन्होंने तीसरे हिस्सा के बांट कर देने की आज्ञा चाही तो इस हिस्सा की आप ने इजाज़त दे दी परन्तु साथ फ़रमाया" कि अर्थात तीसरे हिस्सा की वसीयत भी बहुत अधिक है दो तिहाई भी अधिक है।

اَلثُّلُثُ وَالثُّلُثُ كَثِيْرٌ

अत: यह ख़्याल कि इस्लाम का यह आदेश है कि जो माल ज़रूरत से अधिक बचे उसे तक़सीम कर देना चाहिए बिल्कुल इस्लाम के ख़िलाफ़ और सहाबा रज़ि के अनुकरण के ख़िलाफ़ है।' क्योंकि सहाबा के अनुकरण ऐसे थे। "जिनमें से कुछ की वफ़ात पर लाखों रुपया उनके वुरसा में बंटा गया।'

(तफ़सीर कबीर भाग 2, पृष्ठ 494)

एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि वर्णन करते हैं कि जब मैं मक्का में बीमार हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी अयादत के लिए तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सीने पर हाथ रखा तो मैंने आप के हाथ की ठंडक अपने दिल पर महसूस की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हाथ रखकर मुझे फ़रमाया कि तुम्हें तो दिल की तकलीफ़ है अत: तुम हारिस बिन कलदह के पास जाओ जो बनू सकीफ़का के भाई है वह वैद्य है और उसे कहो कि वह मदीना की सात अजवा ख़जूरों को उनकी गुठलियों सहित पीस ले और तुम्हें बतौर दवाई पिलाए।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3, पृष्ठ 108 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

एक रिवायत में वर्णन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का में एक व्यक्ति को खासतौर पर निर्धारित फ़रमाया कि वह हज़रत सअद रज़ि का ख़्याल रखे और उसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नसीहत फ़रमाई कि अगर हज़रत सअद रज़ि मक्का में फ़ौत हो जाएं तो उन्हें हरगिज़ मक्का में न दफ़नाया जाए बल्कि मदीना लाया जाए और वहां दफ़न किया जाए।

(तबक़ात इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 108 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो हज़रत सअद रज़ि का शिकार के बारे में घटना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि

"रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यद्यपि ख़ुद शिकार नहीं किया करते थे परन्तु हदीसों से साबित है कि आप शिकार करवाया करते थे। अत: एक जंग में आप ने सअद बिन अबी वक़ास रज़ि को बुलाया और फ़रमाया कि देखो वह हिरन जा रहा है उसे तीर मॉरो। जब वह तीर मारने लगे तो आपने प्यार से अपनी ठोढ़ी उनके कंधे पर रख दी और फ़रमाया हे ख़ुदा इस का निशाना ठीक कर दे।"

(तफ़सीर कबीर भाग 5 पृष्ठ 124)

हज़रत सअद रज़ि को अल्लाह तआला ने यह सौभाग्य भी प्रदान फ़रमाया कि इराक़ आप के हाथों पर फ़तह हुआ। जंग ख़ंदक़ के अवसर पर एक बार सहाबा किराम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निदेवन किया कि ख़ंदक़ में एक चट्टान आ गई है जो टूटती नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गए और तीन कुदालें इस चट्टान पर मारीं और हर बार चट्टान कुछ टूटी और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बुलन्द आवाज़ से अल्लाहु-अकबर कहा और आप के अनुकरण में सहाबा ने भी नारा लगाया। इस अवसर पर एक चोट पर आप ने फ़रमाया कि मुझे मदाइन के सफ़ैद महल गिरते हुए दिखाए गए हैं। आप ने जो देखा वह हज़रत सअद रज़ि के हाथों पूरा हुआ।

(उद्धरित रोशन सितारे भाग 2, पृष्ठ 79)

अरब के माहौल में दो बड़ी ताक़तें थीं। एक किसरा की, दूसरी क़ैसर की। इराक़ का बड़ा हिस्सा किसरा के अधीन था और मदाइन में उनके शाही महल थे। मदाइन, क़ादसिया , नहावनद और जलूलाअ की मशहूर लड़ाइयां हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के नेतृत्व में लड़ी गई।

मदाइन का परिचय यह है कि इराक़ में बग़दाद से कुछ दूरी पर दक्षिण की तरफ़ दरिया दजला के किनारे स्थित है। चूँकि यहां एक के बाद कई शहर आबाद हुए इसलिए अरबों ने उसे मदाइन अर्थात कई शहरों का सार कहना शुरू कर दिया।

क़ादसिया भी इराक़ का एक शहर था जहां मुसलमानों और फ़ारसियों के बीच मशहूर जंग लड़ी गई जिसे जंगे क़ादसिया कहते हैं और मौजूदा क़ादसिया का शहर कूफ़ा से पंद्रह फ़र्सख़ की दूरी पर है।

नहावनद यह मौजूदा ईरान में स्थित एक शहर है जो ईरानी प्रान्त हमदान में इसकी राजधानी हमदान से 70 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है।

जलूलाअ वर्तमान इराक़ का शहर है जो दरिया दजला के किनारे स्थित है। यहां मुसलमानों और फ़ारसियों के बीच जंग लड़ी गई। इसका नाम जलूलाअ इसलिए रखा गया कि यह शहर ईरानियों की लाशों से भर गया था।

इराक़ में हज़रत अबू बकर रज़ि के ज़माना में हज़रत मुसन्नाा बिन हारसा ने ईरानियों के बार-बार तंग करने के कारण से बॉर्डर पर चढ़ाई की इजाज़त चाही। हज़रत अबू बकर रज़ि ने उन्हें इजाज़त दे दी। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि को एक बड़े लश्कर के साथ उनकी मदद के लिए रवाना फ़रमाया। जब सीरिया से हज़रत अब्बू उबैदा रज़ि ने दरबारे ख़िलाफ़त से सहायता चाही तो हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत ख़ालिद रज़ि को उनकी मदद के लिए भिजवा दिया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि ने इराक़ में हज़रत मुसन्ना को अपना जांनशीन निर्धारित किया लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ि के इराक़ से जाने के साथ ही यह मुहिम कमाज़ोर पड़ गई । जब हज़रत उमर रज़ि ख़लीफ़ा हुए तो आप ने दोबारा इराक़ की मुहिम की तरफ़ ध्यान फ़रमाया। हज़रत मुसन्ना ने बोवैब और अन्य जंगों में दुश्मनों को एक के बाद दूसरी बार हरा कर इराक़ के एक बड़े हिस्सा पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त इराक़ का इलाक़ा किसरा के अधीन था। ईरानियों को जब मुसलमानों की जंगी कुव्वतों का अंदाज़ा हुआ और उनकी निरन्तर विजयों ने उनकी आँखें खोलीं तो उन्होंने पूरान दुख़त जो उनकी मलिका थी उसकी बजाय ख़ानदान किसरा के असली वारिस जो यज़गर्द था उसको तख़्त पर आसीन किया। उसने तख़्त पर बैठते ही ईरानी सलतनत की समस्त ताक़तों को जमा किया। सारे देश में मुसलमानों के ख़िलाफ़ जोश तथा बदला की आग भड़काई। इन हालात में हज़रत मुसन्ना को मजबूर हो कर अरब की सरहद से हटना पड़ा। हज़रत उमर रज़ि को जब इन घटनाओं का इल्म हुआ तो आप ने अरब में जोश वाले ख़तीब हर तरफ़ फैला दिए और किसरा के ख़िलाफ़ मुसलमानों को खड़ा होने के लिए कहा। नतीजा यह हुआ कि अरब में एक जोश पैदा हुआ और हर तरफ़ से इस्लाम पर जान कुरबान करने वाले हथेली

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पर जानें रखकर दारुल ख़ुलफ़ा की तरफ उमड़ आए। हज़रत उम्र रज़ि ने मश्वरा किया कि इस मुहिम की क़ियादत किस के सपुर्द की जाए। अवाम के मश्वरे से हज़रत उमर रज़ि ख़ुद इस मुहिम की क़ियादत के लिए तैयार हुए लेकिन हज़रत अली रज़ि और बड़े सहाबा रज़ि की राय इस में रोक हुई, उन्होंने रोक दिया। इस उद्देश्य के लिए हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि का नाम भी पेश किया गया। उसी समय में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि उठे और निदेवन किया हे अमीरुल मोमनीन इस मुहिम के लिए मुझे सही आदमी मालूम है। हज़रत उम्र रज़ि ने फ़रमाया कि वह कौन है? हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने निदेवन किया कि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि इसके बाद सब लोगों ने हज़रत सअद रज़ि के नाम पर सहमति की और हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत सअद रज़ि के बारे में फ़रमाया

اِنَّہٗ رَجُلٌ شُجَاعٌ رَامٍ

अर्थात वह एक बहुत बहादुर निडर और ज़बरदस्त तीर अंदाज़ इन्सान है। हज़रत मुसन्ना मुक़ाम ज़ी क़ार, कूफ़ा और वास्ति के बीच एक जगह है इस में आठ हज़ार जान कुरबान करने वाले बहादुरों के साथ हज़रत सअद रज़ि की प्रतीक्षा कर रहे थे कि उनको ख़ुदा की तरफ़ से बुलावा आ गया और उनकी वफ़ात हो गई और उन्होंने अपने भाई हज़रत मुअन्ना को सिपहसालार निर्धारित किया। हज़रत मुअन्ना ने हिदायत के अनुसार हज़रत सअद रज़ि से मुलाक़ात की और हज़रत मुसन्ना का पैग़ाम पहुंचाया। हज़रत सअद रज़ि ने अपनी फ़ौज का जायज़ा लिया तो वह लगभग तीस हज़ार आदमियों पर आधारित लश्कर था। आप ने लश्कर को तर्तीब दिया और लश्कर का जो दायाँ हिस्सा था और बायां हिस्सा था उसकी तक़सीम कर के उन पर अलग अलग अफ़्सर निर्धारित किए और आगे बढ़े और क़ादसिया का घेराव कर लिया। क़ादसिया की जंग 16 हिज्री के अन्त में हुई । कुफ़्फ़ार की संख्या दो लाख अस्सी हज़ार के लगभग थी और उनके लश्कर में तीस हाथी थे। ईरानी फ़ौज की कमान रुस्तम के हाथ में थी। हज़रत सअद रज़ि ने कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दावत दी उसके लिए आपने हज़रत मुग़ीरह बिन शुअबह रज़ि को भेजा। रुस्तम ने उनसे कहा कि तुम लोग ग़रीब हो और ग़रीबी को दूर करने के लिए यह सब कुछ कर रहे हो। हम तुम्हें इतना देंगे कि तुम तृप्त हो जाओगे। हज़रत मुग़ैरह रज़ि ने जवाब में कहा कि हमने ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत पर लब्बैक कहा। हम तुम्हें ख़ुदाए वाहिद की तरफ़ और उसके नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की तरफ़ दावत देते हैं। अगर तुम ये क़बूल कर लू तो तुम्हारे लिए बेहतर है वर्ना फिर जंग है, तलवार है जो हमारे और तुम्हारे दरमयान फ़ैसला करेगी। इस जवाब से रुस्तम का चेहरा सख़्त सुर्ख़ हो गया क्योंकि उनकी तरफ़ से पहल हुई थी और वो जंग करना चाहते थे। उन्होंने कहा हम तो अभी भी जंग नहीं करना चाहते हम तो तुम्हें इस्लाम की तब्लीग़ कर रहे हैं पैग़ाम दे रहे हैं लेकिन तुम अगर जंग चाहते हो तो फिर ठीक है फिर तलवार ही फ़ैसला करेगी। बहरहाल उस का चेहरा सुर्ख़ हो गया। मुशरिक था। उसने कहा सूरज और चांद की कसम कि सुबह के उदय होने से पहले हम जंग का आरम्भ करेंगे और तुम सबको तलवार से काट देंगे। हज़रत मुग़ैरह रज़ि ने कहा कि لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कि सारी ताक़तों का स्रोत और केन्द्र अल्लाह तआला ही है और यह कह कर वह अपने घोड़े पर सवार हो गए। हज़रत सअद रज़ि को हज़रत उमर रज़ि का पैग़ाम मिला कि पहले उनको दावत हक़ दो। अत: हज़रत सअद रज़ि ने मशहूर शायर और घुड़सवार हज़रत उम्र बिन मअदी करिब रज़ि और हज़रत अशअस बिन केस किन्दी रज़ि को इस वफ़द के साथ भेजा। रुस्तम से उनका आमना सामना हुआ तो उसने पूछा कि किधर जा रहे हो? तो उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे वाली से मिलने। इस पर रुस्तम और उनके बीच विस्तार से बातचीत हुई। वफ़द के मैंबरों ने कहा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमसे वादा किया है कि हम तुम्हारे इलाक़े पर क़ाबिज़ होंगे। इस पर रुस्तम ने मिट्टी की टोकरी मँगवाई और कहा लो यह है हमारी ज़मीन। इसे सिर पर उठा लो। हज़रत अमरो बिन मअदी करबी रज़ि जल्दी से उठे और मिट्टी की टोकरी अपनी झोली में रख ली और चल दिए और कहा कि यह शगुल है कि हम ग़ालिब होंगे और उनकी ज़मीन हमारे क़ब्ज़ा में आ जाएगी। फिर वह ईरान के बादशाह के दरबार में पहुंचे और उसे इस्लाम की दावत दी जिस पर वह बहुत नाराज़ हुआ और कहा मेरे दरबार से चले जाओ। अगर तुम दूत न होते तो मैं तुम्हें क़त्ल करवा देता। फिर उसने रुस्तम को हुक्म दिया कि उन्हें न भूलने वाला सबक़ सिखाया जाए। जुम्मेरात के दिन ज़ुहर के बाद जंग का नक़्क़ारा बजा। हज़रत सअद रज़ि ने तीन बार अल्लाहु-अकबर का नारा बुलंद किया और चौथे पर जंग शुरू हो गई। हज़रत सअद रज़ि बीमार थे और जंग के मैदान के क़रीब क़सर उज़ैब के ऊपरी मंज़िल में बैठे फ़ौज को हिदायतें दे रहे थे।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2, पृष्ठ 79 ता82) (एटलस फ़ुतूहात इस्लामिया पृष्ठ 81, 100 , 118, 126) (मुअजमुल बुलदान भाग 4 पृष्ठ 333 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

इस घटना को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने भी वर्णन फ़रमाया है कि हज़रत उम्र रज़ि के ज़माना में जब ख़ुसरो परवेज़ के पोते यज़जर तख़त पर आसीन हुआ तो उस के बाद इराक़ में मुसलमानों के विरुद्ध व्यापक स्तर पर जंगी तैयारियां शुरू हो गईं तो हज़रत उमर रज़ि ने उनके मुक़ाबला के लिए हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के नेतृत्व में एक लश्कर रवाना किया। हज़रत सअद रज़ि ने जंग के लिए क़ादसिया का मैदान चुना और हज़रत उमर रज़ि को इस स्थान का नक़्शा भिजवा दिया। हज़रत उमर रज़ि ने इस स्थान को पसन्द किया परन्तु साथ ही लिखा कि इस से पहले कि ईरान के बादशाह साथ जंग की जाए तुम्हारा फ़र्ज़ है कि एक प्रतिनिधि वफ़द ईरान के बादशाह के पास भेजो और उसे इस्लाम क़बूल करने की दावत दो। अत: उन्होंने इस हुक्म के मिलने पर एक वफ़द यज़जर की मुलाक़ात के लिए भिजवा दिया। जब यह वफ़द ईरान के बादशाह के दरबार पर पहुंचा। ईरान के बादशाह ने अपने अनुवादक से कहा कि इन लोगों से पूछो कि यह क्यों आए हैं? जब उसने यह सवाल किया तो वफ़द के रईस हज़रत नौअमान बिन मुक़र्रिन खड़े हुए और उन्होंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत का वर्णन करते हुए बताया कि आप ने हमें हुक्म दिया है कि हम इस्लाम को फैलाएं और दुनिया के समस्त लोगों को सच्चे धर्म में शामिल होने की दावत दें। इस हुक्म के अनुसार हम आपकी सेवा में हाज़िर हुए हैं और आपको इस्लाम में शामिल होने की दावत देते हैं। यज़्दजर्द इस जवाब से बहुत नाराज़ हुआ और कहने लगा कि तुम एक वहशी और मुर्दा खाने वाली क़ौम हो। तुम्हें अगर भूख और ग़रीबी ने इस हमले के लिए मजबूर किया है तो मैं तुम सबको इतना खाने पीने का सामान देने को तैयार हूँ कि तुम सन्तोष से अपनी ज़िन्दगी व्यतीत कर सको। हालाँकि आरम्भ उनकी तरफ़ से ही हुआ था और फिर इल्ज़ाम भी मुसलमानों को दे रहे थे। बहरहाल फिर कहने लगा कि इसी तरह तुम्हें पहनने के लिए लिबास भी दूँगा। तुम ये चीज़ें लो और अपने देश वापस चले जाओ। यहां बॉर्डर पर बैठे अपनी सरहदों की हिफ़ाज़त कर रहे हो उस को छोड़ दो और मैं जिस तरह इस इलाक़े पर क़ब्ज़ा करना चाहता हूँ मुझे करने दो। तुम हमसे जंग कर के अपनी जानों को क्यों नष्ट करना चाहते हो? जब वह बात ख़त्म कर चुका तो इस्लामी वफ़द की तरफ़ से हज़रत मुग़ैरा बिन ज़ुरारह रज़ि खड़े हुए और उन्होंने कहा आपने हमारे बारे में जो कुछ वर्णन किया है वह बिलकुल ठीक है। हम वास्तव में एक जंगली और मुर्दा खाने वाली क़ौम थे। साँप और बिच्छू और टिड्डियां और छिपकलियां तक खा जाते थे लेकिन अल्लाह तआला ने हम पर फ़ज़ल किया और उसने अपना रसूल हमारी हिदायत के लिए भेजा। हम उस पर ईमान लाए और हमने उसकी बातों का अनुकरण किया। जिसका नतीजा यह हुआ कि अब हम में एक इन्क़िलाब पैदा हो चुका है और अब हम में वे ख़राबियां मौजूद नहीं जिनका आपने वर्णन किया है। अब हम किसी लालच में आने के लिए तैयार नहीं हैं। हमारी आपसे जंग शुरू हो चुकी है। अब उस का फ़ैसला मैदाने जंग में ही होगा। दुनयावी माल तथा सामान का लालच हमें अपने इरादे से रोक नहीं सकता। यज़्दजिर्द ने यह बात सुनी तो उसे सख़्त ग़ुस्सा आया और उसने एक नौकर से कहा कि जाओ और मिट्टी का एक बोरा ले आओ। जब मिट्टी का बोरा आया तो उसने इस्लामी वफ़द के सरदार को आगे बुलाया और कहा चूँकि तुमने मेरी पेशकश को ठुकरा दिया है इसलिए अब इस मिट्टी के बोरे के सिवा तुम्हें कुछ और नहीं मिल सकता। वह सहाबी बहुत संजीदगी के साथ आगे बढ़े। उन्होंने अपना सिर झुका दिया और मिट्टी का बोरा अपनी पीठ पर उठा लिया। फिर उन्होंने एक छलांग लगाई और तेज़ी के साथ उस के दरबार

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

से निकल खड़े हुए और अपने साथियों को बुलन्द आवाज़ से कहा। आज ईरान के बादशाह ने अपने हाथ से अपने देश की ज़मीन हमारे हवाले कर दी है और फिर घोड़ों पर सवार होकर तेज़ी से निकल गए। बादशाह ने जब उनका यह नारा सुना तो वह काँप उठा और उसने अपने दरबारियों से कहा दौड़ो और मिट्टी का बोरा उनसे वापस ले आओ। यह तो बड़ा बुरा शगुन हो गया है कि मैंने अपने हाथ से अपने देश की मिट्टी उनके हवाले कर दी है परन्तु वे उस वक़्त तक घोड़ों पर सवार होकर बहुत दूर निकल चुके थे। लेकिन आख़िर वही हुआ जो उन्होंने कहा था और कुछ साल के अंदर अंदर सारा ईरान मुसलमानों के अधीन आ गया। यह महान परिवर्तन मुसलमानों में क्यों पैदा हुआ? इसलिए कि कुरआन की शिक्षा ने उनके आचरण, उनकी आदतों में एक इन्क़िलाब पैदा कर दिया था। उनकी सांसारिक ज़िन्दगी पर उसने एक मौत छा दी थी और उन्हें बुलंद किरदार और उच्च आचरण पर ला कर खड़ा कर दिया था। और इसके नतीजा में फिर वे दुनिया में इस्लाम फैलाने वाले बने और इस्लाम की शिक्षा पर अनुकरण करते हुए सच्चे मुसलमान बनाने वाले बने और कोई ख़ौफ़ और ख़तरा किसी ताक़त का उनको भयभीत नहीं कर सका।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 204-205)

बहरहाल उनके वर्णन का अभी कुछ हिस्सा रहता है बाक़ी हिस्सा इंशा अल्लाह बाद में वर्णन करूंगा।

मैं आज भी कुछ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा और उनमें से पहला जनाज़ा आदरणीया बुशरा अक़रम साहिबा पत्नी मुहम्मद अक़रम बाजवा साहिब का है जो पाकिस्तान में नाज़िर तालीमुल क़ुरआन वकफ़े आरिज़ी हैं । 25 मार्च 2020 ई को 66 साल की उम्र में यह वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। हालात की वजह से उस वक़्त जनाज़ा नहीं पढ़ा गया था। मरहूमा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। आपकी औलाद में दो बेटे और एक बेटी शामिल हैं। बुशरा अक़रम साहिबा अपने पति आदरणीय मुहम्मद अक़रम बाजवा साहिब के साथ पंद्रह साल लाइबेरिया में रहीं। इसी दौरान सदर लज्ना इमा उल्लाह लाइबेरिया के तौर पर सेवा की तौफ़ीक़ पाई। लाइबेरिया में घरेलू जंग के दौरान अपने पति और बच्चों समेत पंद्रह दिन तक उन्हें आर्मी की बेरिकस में क़ैद में रखा गया। मुहम्मद अक़रम बाजवा साहिब लिखते हैं कि मरहूमा ने एक वाकिफे ज़िन्दगी के साथ अर्थात अक़रम साहिब के साथा 37 साल का समय बहुत इख़लास, धैर्य और वफ़ा के साथ व्यतीत किया विशेष रूप से ख़ाकसार की लाइबेरिया में बतौर मुबल्लिग़ जब तक़र्ररी हुई और वहां अमीर जमाअत भी थे तो 23 साल के रहने के दौरान तब्लीग़ी और तर्बीयती मामलों में सहायता की। मेहमानों को खिलाया पिलाया। अन्य जमाअत के मामलों में मददगार रहीं। सदर लजना इमा उल्लाह लाइबेरिया के तौर पर सेवा की तौफ़ीक़ पाई। लाइबेरिया में मरहूमा अपने पंद्रह वर्ष के निवास के दौरान कई बार मलेरिया और टाईफ़ाईड के रोग में ग्रसित हुईं लेकिन इसके बावजूद बहुत धैर्य के साथ विनीत के साथ काम में सम्मिलित रहीं। मरहूमा ने बच्चों की बेहतरीन धार्मिक आचरण पर तर्बीयत की है और दो बच्चे माशा अल्लाह वफ़ा के साथ जमाअत से जड़े हुए हैं।

एक वाकिफे ज़िन्दगी मन्सूर नासिर साहिब जो वहां शायद हाई स्कूल के प्रिंसिपल हैं वह लिखते हैं कि तीन साल निरन्तर जब तक मैं अकेला लाइबेरिया में रहा मुझे अपने घर में रखकर उन्होंने मेहमान नवाज़ी की और बच्चों की तरह रखा, छोटे भाइयों की तरह रखा। अल्लाह तआला उनकी औलाद को भी उनकी दुआओं का वारिस बनाए और नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे। क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा इक़बाल अहमद नासिर पैर कोटि का है जो करोंडी ज़िला ख़ैरपुर के थे। 14 जुलाई 2020 ई को 82 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके बेटे अकबर अहमद ताहिर साहिब बुर्कीना फासो में मुबल्लिग़ सिलसिला हैं। वह कहते हैं कि आप आदरणीय मियां नूर मुहम्मद साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे थे, सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे थे। मियां इमाम दीन साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पोते और मियां पीर मुहम्मद साहिब और आदरणीय हाफ़िज़ मुहम्मद इस्हाक़ साहिब सहाबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। जमाअत के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। लंबा समय तक बतौर सैक्रेटरी माल सेवा की तौफ़ीक़ पाई। अन्सारुल्लाह के ज़ईम भी रहे। इमामुस्सलात भी थे। मुरब्बी अत्फ़ाल इत्यादि की सेवा भी अदा करते रहे। कहते हैं कि बचपन में मैंने देखा कि एक डिब्बे में पैसे अलग करके रखते थे और पूछने पर बताया करते थे कि चंदे के पैसे साथ के साथ अलग करके रखता जाता हूँ ताकि वक़्त पर अदायगी कर सकूं। बड़ी भावना और शौक़ से तब्लीग़ किया करते थे। आपके द्वारा कई नेक रूहें जमाअत में शामिल हुईं। दुआ करने वाले, नमाज़ तथा रोज़ों के पाबन्द और तहज्जुद की नमाज़ अदा करने वाले थे। यह बुर्कीना फासो में हैं। वह कहते हैं कि हमारे बड़े इसरार पर यहां 2016 ई में बुर्कीना फासो आए और इस दौरान में जितने जमाअत के जलसे हुए, इज्तिमाआत हुए उनमें शिरकत की और बड़े जोश से वहां नारे लगाते थे और हाज़रीन का ख़ून गर्माया और दिली सुकून प्राप्त किया क्योंकि पाकिस्तान में लंबे समय से जमाअत जलसे न होने की वजह से उनके दिल में एक प्यास थी। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी बशीरां बेगम साहिबा और तीन बेटे और तीन बेटियां हैं।

अमीर मिशनरी इंचार्ज बुर्कीना फासो लिखते हैं कि जब बुर्कीना फासो आए हैं तो यद्यपि उनको ज़बान का मसला था। वहां फ्रैंच बोली जाती है लेकिन उनकी मुहब्बत की ज़बान को हर कोई समझता था और वह हर एक से इतने प्यार से मिलते कि हर कोई उनका चाहने वाला हो जाता था। उनकी वफ़ात पर यहां के स्थानीय लोगों ने बहुत मुहब्बत से उनका वर्णन किया है। लिखते हैं कि हमारे नैशनल सैक्रेटरी इशाअत बापीना (Bapina) साहिब ने उनकी तस्वीर शेयर की और उन्होंने वफ़ात के बाद लिखा कि बुर्कीना फासो के निवास के दौरान उनसे मिला तो मैंने उनको वास्तव में सच्चा अहमदी पाया। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को उनकी दुआओं का वारिस बनाए। उनके बेटे जो वहां मुरब्बी हैं वह जनाज़ा में शामिल नहीं हो सके थे।

तीसरा जनाज़ा ग़ुलाम फ़ातिमा फ़हमीदा साहिबा का है जो मुहम्मद इब्राहीम साहिब की पत्नी थीं। दूल्या जट्टां ज़िला कोटली कश्मीर की हैं। 18 जुलाई 2020 ई को 72 साल की उम्र में लम्बी बीमारी के बाद उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। 1944 ई में उनके पिता ने बैअत की थी। उनका नाम नेक मुहम्मद उर्फ़ काले ख़ान था और बैअत से पहले उन्होंने ख़्वाब देखा था कि मैं किसी बुज़ुर्ग से मिलने जा रहा हूँ। जब मैंने बुज़ुर्ग को देखा तो उनकी तरफ़ बढ़कर गले मिला। उस बुज़ुर्ग ने काले ख़ान साहिब को फ़रमाया कि काले ख़ान आप कब हमारे पास आ रहे हैं? तो काले ख़ान साहिब ने कहा कि मैं तो आ ही गया हूँ। तो कहते हैं जब एक शख़्स के पास हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ि की तस्वीर देखी तो आपने पहचान लिया और कहा इसी बुज़ुर्ग शख़्स को मैंने ख़्वाब में देखा था और ख़त के द्वारा आपने बैअत कर ली और उनकी बैअत के बाद उनकी पत्नी ने भी कहा कि मेरी बैअत भी साथ ही करवा दें और उन्होंने भी बैअत कर ली। दोनों मियां बीवी मुख़लिस थे। इसी तरह उनकी औलाद फ़हमीदा फ़ातिमा साहिबा जो फ़ौत हुई हैं उन पर उनकी तर्बीयत का प्रभाव है। यह भी पांचों समय की नमाज़ी और तहज्जुद अदा करने वाली थीं। तिलावत क़ुरआन करीम नियमित करने वाली थीं और आपके बच्चों ने अक्सर आपको ख़ुदा के हुज़ूर रातों को उठ उठकर रोते हुए देखा है। नमाज़ जुमा की अदायगी के लिए जब औरतों को इजाज़त थी तो उस वक़्त आप नमाज़ जुमा के लिए एक घंटा पहले मस्जिद में चली जातीं और नवाफ़िल और दुआओं में समय गुज़ारतीं। बहुत बहादुर, हौसले वाली और सब्र करने वाली थीं। आपके पति 1965 ई और 1971 ई की जंग में दो बार क़ैद हुए। पहली बार तो लंबे अरसा तक आपके पति के ज़िन्दा होने की कोई ख़बर नहीं आई और उनको शहीद समझा गया कि वह शहीद हो गए हैं। ग़ायबाना नमाज़ जनाज़ा भी अदा कर दी गई लेकिन इसके बावजूद आपको हौसला था कि पति ज़िन्दा मौजूद हैं और ज़रूर वापस आएँगे। आख़िर अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया और पति को रिहाई नसीब हुई और वापस आ गए। मरहूमा ने पीछ रहने वालों में पति आदरणीय मुहम्मद इब्राहीम साहिब के अतिरिक्त चार बेटे और दो बेटियां यादगार छोड़े हैं। तीन बेटे वाकिफे ज़िन्दगी हैं और मुहम्मद जावेद साहिब ज़ेमबिया में बतौर मुबल्लिग़ सेवा की तौफ़ीक़ पा

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

रहे हैं। माता की वफ़ात पर पाकिस्तान नहीं जा सके। अल्लाह तआला मरहूमा से रहम और क्षमा का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय मुहम्मद अहमद अनवर साहिब हैदराबादी का है जो 22 मई को 94 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके दादा शेख़ दाऊद अहमद साहिब के द्वारा आई थी। आरम्भिक उम्र में आपके पिता ने अपने दो बेटों को अर्थात मुहम्मद अहमद साहिब अनवर और मजीद अहमद साहिब को शिक्षा के उद्देश्य से कादियान भिजवा दिया था। कादियान में मिनारतुल मसीह पर अज़ान देने का सौभाग्य भी उनको हासिल हुआ। मुहम्मद अहमद साहिब आरम्भ से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के साथ रहे और पार्टीशन के बाद हुज़ूर के साथ रब्बाह आ गए। इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह तआला के साथ उनके ड्राईवर के तौर पर भी काम किया। फिर उन्होंने अपनी शिक्षा सम्पूर्ण की और फ़िज़ीकल एजूकेशन में डिप्लोमा लिया। फिर उर्दू में और इस्लामीयात में एम ए किया,डी पी की परीक्षा पास किया। फिर तालीमुल इस्लाम कॉलेज में उनको लम्बा समय सेवा करने का अवसर मिला। 1973 ई से 1976 ई तक तीन साल के लिए वक़्फ़ करके गेम्बिया चले गए। 1978 ई से 1986 ई नाईजीरिया में लड़कियों के कॉलेज में इस्लामीयात के टीचर रहे। 1988 ई में पाकिस्तान से जर्मनी हिजरत की और 2009 ई में वहां से यूके आ गए और फिर यहीं रहे। मरहूम के चार बेटे और दो बेटियां हैं जो सब शादीशुदा हैं। क़ज़ा बोर्ड जर्मनी के नायब सदर रहे। एक वक़्त में जमाअत जर्मनी के आडीटर भी रहे। उनकी बेटी अमतुल मजीद साहिबा कहती हैं कि मेरे पिता दुआओं का एक ख़ज़ाना थे। अपनी ज़िन्दगी में उन्होंने सिर्फ नमाज़, क़ुरआन, रोज़ा और ख़िलाफ़त की सेवा करने को अपना ओढ़ना बिछौना बनाया और हम सब बच्चों को भी यही नसीहत की है। अल्लाह तआला मरहूम से रहम और मग़फ़िरत का व्यवहार फ़रमाए।

आज का जो आख़िरी जनाज़ा है वह आदरणीय सलीम हुस्न अलजाबी साहिब मरहूम आफ़ सीरिया का है। 30 जून को 92साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनकी बेटी लुबना अलजाबी साहिबा और उनकी पोती हिबा अलजाबी साहिबा जो डाक्टर बिलाल ताहिर साहिब की पत्नी हैं और यहां यूके में रहती हैं। वह कहती हैं कि सलीम जाबी साहिब का जन्म दिसम्बर 1928 ई में दमिशक़ के देहाती इलाक़े में हुआ था। 18 साल की उम्र में जाबी साहिब का अहमदियत से परिचय एक सादा से अहमदी किसान आदरणीय अबू ज़हब के द्वारा हुआ। इस पर जाबी साहिब ने इस्तिख़ारा किया तो ख़्वाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा और ख़्वाब में ही आप की बैअत की। बाद में अबूज़हब साहिब ने उन्हें इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी का अरबी अनुवाद दिया। इस किताब पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर देखकर उस वक़्त के जमाअत अहमदिया सीरिया के अमीर आदरणीय मुनीर अलहसनी साहिब के पास जा कर बैअत कर ली। उनके ख़ानदान की तरफ़ से, पिता की तरफ़ से सख़्त मुख़ालिफ़त थी लेकिन मरहूम दृढ़ रहे। फिर उनको हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ि के ज़माना में पाकिस्तान जाने का अवसर मिला। वहां हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की छत्र छाया में छ: साल उन्होंने रब्बाह में गुज़ारे और वहीं धार्मिक शिक्षा प्राप्त की। इसी तरह उर्दू भाषा भी सीखी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के आदेश पर पाकिस्तान में ही उनकी शादी हुई और हुज़ूर ने उनका निकाह पढ़ाया। उनकी पत्नी पाकिस्तानी थीं। मरहूमा की पोती हिबा जाबी साहिबा लिखती हैं कि हमारे दादा हमेशा हमें नसीहत करते और तालीम तथा तर्बीयत के लिए वक़्त देते थे और रुहानी तरक़्क़ी और ख़िलाफ़त के साथ जुड़ने जैसे मामलों पर-ज़ोर देते थे। आपकी पत्नी कुछ वर्ष पहले वफ़ात पा गई थीं। आपके छ: बच्चे थे। एक बेटे डाक्टर नईम अलजाबी साहिब कुछ वर्ष पहले अग़वा हो गए थे और अब तक उनका कोई पता नहीं चला। वसीम अलजाबी पोलैंड में जमाअत के मैंबर हैं और यह हिबा जाबी के पिता हैं। इसी तरह दो बेटियां और दो बेटे सीरिया में हैं। हिबा जाबी साहिबा भी यहां जमाअत की सेवा खासतौर पर किताबों के अनुवाद में अच्छे मश्वरे देती हैं और काम कर रही हैं। उनके पति बिलाल ताहिर भी अनुवाद करते हैं। यह उनकी मदद करती हैं। अल्लाह तआला उनके इख़लास तथा वफ़ा में भी बरकत डाले और उनके इर्फ़ान को बढ़ाए।

उनकी बेटी लुबना अब्दुल खबीर अलजाबी लिखती हैं कि हमें रस्मों और बिदअतों की पैरवी से मना करते और अल्लाह से सम्बन्ध बनाने और तब्लीग़ की नसीहत करते। ग़रीबों पर बहुत ख़र्च करते। मरहूम के द्वारा सीरिया और लबनान में कई लोगों ने बैअत की जिनमें ईसाई भी शामिल थे। फिर कहती हैं कि हमें आख़िरी वसीयत यह की कि ख़िलाफ़त से हमेशा चिमटे रहना और समय के ख़लीफ़ा की नसीहतों पर अनुकरण करना। तब्लीग़ में सुस्ती न करना और हमेशा हर काम के लिए दुआ से काम लेना और हक़ के रास्ते में किसी ज़ुल्म की पर्वा न करना। सदर जमाअत लबनान उम्र अल्लाम साहिब लिखते हैं कि अहमदियत से परिचय से पहले हम सलीम अलजाबी साहिब मरहूम की किताबें पढ़ते थे और इस में ज़हूर इमाम अल्ज़मान अलैहिस्सलाम और इस की मुबारक जमाअत की तरफ़ इशारे होते थे। जब हम ये सब पढ़ चुके और फिर उन्होंने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत के बारे में खुल कर बताया और बैअत का कहा कि बैअत करो। यह उनका अपना एक अंदाज़ था। ज़रूरी नहीं कि हर जगह ही सही चले लेकिन बहरहाल उन्होंने इस तरह तब्लीग़ की और बहुत से लोगों को तब्लीग़ कर के अहमदी बनाया। इसी तरह कहा कि अब मेरी किताबें छोड़कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के ख़लीफ़ाओं और जमाअत की किताबें पढ़ें। फिर कहते हैं कि हम दोस्तों ने जो लबनान के अव्वलीन अहमदी हैं मरहूम के द्वारा बैअत की थी और हम इस बारे में उनके एहसान को स्वीकार करते हैं और उनका शुक्रिया अदा करते हैं। उनके लिए दुआ करते हैं।

मातज़ कज़क साहिब जो सीरियन हैं और आजकल कैनेडा में रहते हैं। कहते हैं सीरिया में एक स्थानीय जमाअत का सदर था तो उस वक़्त कई बार अलजाबी साहिब से मिला। मैंने देखा कि जब भी ख़िलाफ़त का वर्णन आता तो वह प्राय कहते थे कि मेरी इच्छा है कि ख़िलाफ़त के क़दमों में मेरी मौत आए।

मीर अन्जुम परवेज़ साहिब यहां अरबी डैसक के मुबल्लिग़ सिलसिला हैं वह कहते हैं जब भी निज़ाम ख़िलाफ़त के नाम पर कोई बात कही जाती तो सिर को झुका देते थे और साफ इस बात का इज़हार करते कि जो भी निज़ामे जमाअत मुझे हुक्म देगा मैं उस का आज्ञापालन करूँगा। 2011 ई में सीरिया से जलसा सालाना यूके पर आए थे और कहते थे कि मेरी इच्छा है कि यहां समय के ख़लीफ़ा के क़दमों में मेरी जान निकल जाए और मेरे लिए इस से बढ़कर कोई सम्मान नहीं। जाबी साहिब के द्वारा बहुत से लोगों ने अहमदियत स्वीकार की और उनमें से अक्सर जमाअत और ख़िलाफ़त के वफ़ादार और मुख़्लिस अहमदी हैं। बहुतों ने मुझे ख़त भी लिखे हैं कि हमने उनसे बहुत कुछ सीखा और उन से अहमदियत स्वीकार की। फिर जाबी साहिब कहते थे कि हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल राजेकी साहिब रज़ि ने ख़ुद मुझे फ़रमाया था कि मेरी किताब "हयाते क़ुदसी' का अनुवाद करो ताकि अरब लोगों को पता चले कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा कैसे थे? अत: उन्होंने हयात क़ुदसी का अरबी तर्जुमा भी किया था। अरबी तो ख़ैर उनकी अपनी भाषा थी। इसके इलावा उर्दू भी उनको आती थी अच्छी बोल लेते थे। फ़ारसी बोलते थे। अंग्रेज़ी भाषा भी आती थी गुज़ारा कर लेते थे।

2005 ई में मैं कादियान के जलसे में जब गया हूँ तो वहां मुझे मिले। संक्षिप्त सी मुलाक़ात थी लेकिन बहुत विनम्रता से मिले। फिर यूके में मुझे मिले। जलसे पर यहां आए थे और बड़ी विनम्रता से उन्होंने कहा कि ख़िलाफ़त अहमदिया पर मेरा पूर्ण यक़ीन है। पूरी इताअत और पूरी तरह अक़ीदत रखता हूँ और मेरे लिए दुआ भी करें कि निज़ाम जमाअत के साथ हमेशा जुड़ा रहूं। अल्लाह तआला उनकी औलाद और उनकी नस्ल को भी कामिल वफ़ा के साथ जमाअत और ख़िलाफ़त के साथ जोड़े रखे। उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए

अब जुम्अ: की नमाज़ के बाद जैसा कि मैंने कहा (शायद नहीं कहा था लेकिन बहरहाल) जुम्अ: की नमाज़ के बाद इन सब का नमाज़ जनाज़ा ग़ायब अदा करूँगा

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल लंदन 14 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

ख़ुत्बः जुमअः

इस सिलसिला की स्थापना का वास्तविक उद्देश्य यही है कि लोग दुनिया के गंद से निकलें और मूल पवित्रता प्राप्त करें और फ़रिश्तों जैसा जीवन व्यतीत करें।

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात पर यह पहला इज्माअ होना था जो दुनिया में हुआ और इस में हज़रत मसीह की वफ़ात का भी पूर्ण रूप से फ़ैसला हो चुका था।"

"मेरे आने के दो उद्देश्य हैं। मुसलमानों के लिए यह कि असल तक़्वा और पवित्रता पर क़ायम हो जाएं और दूसरा मक़सद यह कि ईसाइयों के लिए सलीब का तोड़ना हो और उनका नक़ली ख़ुदा नज़र न आए।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

अहमदी तो ख़ातमन्नबिय्यीन के स्थान का सबसे ज़्यादा समझ रखते हैं और यह समझ हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही दी है।

मैं सच कहता हूँ और ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूँ कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है। मैं एक ज़रा भी इस्लाम से बाहर क़दम रखना हलाकत का कारण विश्वास करता हूँ और मेरा यही मज़हब है कि जितने फैज़ और बरकतें और अल्लाह तआला के निकट होने के रास्ते कोई शख़्स पा सकता है सिर्फ़ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची इताअत और पूर्ण मुहब्बत से पा सकता है वर्ना नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रोशनी में हज़ूर की बेअसत के उद्देश्यों का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 31 जुलाई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज सुबह हमने ईद भी पढ़ी है और आज जुम्अः भी है। जब ईद और जुम्अः एक दिन जमा हो जाएं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह उपदेश मिलता है कि जो लोग चाहें जुम्अः के स्थान पर ज़ुहर की नमाज़ अदा कर लें। इसकी आज्ञा है। परन्तु साथ ही यह भी है एक ऐसे ही अवसर पर आप ने यह भी फ़रमाया कि हम तो जुम्अः पढ़ेंगे। और आप ने जुम्अः पढ़ा था।

(सुनन इब्ने माजा किताब इकामतुस्सलात बाब मा जा फीमा इज़ा इज्तिमा अलई-दैन फ़ी यौम हदीस 1310, 1311, 1312)

इसलिए मैंने अमीर साहिब को इसकी रोशनी में यही कहा था कि जो ज़ुहर की नमाज़ पढ़ना चाहें बेशक ज़ुहर की नमाज़ बाजमाअत पढ़ लें और जुम्अः न पढ़ें। वैसे भी आजकल के हालात में मस्जिद में अधिक लोग जमा तो हो नहीं सकते। घरों में हैं और घरों में अगर फ़ारिग़ हैं तो फिर जुम्अः जिस तरह पहले पढ़ते थे उसी तरह अब भी पढ़ सकते हैं पढ़ लें और जिनकी व्यस्तता है वे ज़ुहर की नमाज़ भी पढ़ सकते हैं लेकिन हम यहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण में आज जुम्अः पढ़ रहे हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह के ज़माना में भी इसी तरह एक बार ईदुल अज़्हिया आई और जुम्अः भी। तो विभिन्न लोगों ने अपने तर्क पेश किए कि ज़ुहर की नमाज़ पढ़नी चाहिए जुम्अः नहीं होना चाहिए। तो जो लोग ज़ुहर की नमाज़ पढ़ने पर ज़ोर दे रहे थे उनको आप ने इस का बड़ा अच्छा जवाब दिया। फ़रमाते हैं कि हमारा रब कैसा दानी है कि उसने हमें दो-दो ईदें दी हैं। अब जिसको दो-दो चुपड़ी हुई रोटियां मिलें, घी लगी हुई दो दो रोटियाँ मिलें वे एक को क्यों रद्द करेगा। वह तो दोनों ले-लेगा। सिवाए इसके कि उसे कोई ख़ास मजबूरी पेश आ जाए। और इसीलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज्ञा दी है कि अगर कोई मजबूर होकर ज़ुहर की नमाज़ पढ़ ले जुम्अः न पढ़े तो दूसरे को नहीं चाहिए कि उस पर ताना करे और कई लोग ऐसे हैं जिन्हें दोनों नमाज़ें अदा करने की तौफ़ीक़ हो (अर्थात नमाज़ ईद भी और नमाज़ जुम्अः भी) तो दूसरे को नहीं चाहिए कि उन पर एतराज़ करे और कहे कि उन्होंने छूट से लाभ नहीं उठाया। तो बहरहाल छूट तो है लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण हमें यही नज़र आता है कि आप ने फ़रमाया: हम तो जुम्अः पढ़ेंगे।

(उद्धरित ख़ुतबाते महमूद भाग 2 पृष्ठ 208 से 210 ख़ुत्बा ईदुल अज़्हिया फर्मूदा 11 फरवरी 1938 ई)

बहरहाल जैसा कि मैंने कहा कि हम आज जुम्अः पढ़ रहे हैं लेकिन ख़ुत्बा संक्षिप्त दूँगा। इसके लिए मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सालम के कुछ उद्धरण लिए हैं जिनमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी बेअसत के उद्देश्य को वर्णन फ़रमाया है। अपनी जमाअत के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबय्यीन मानने और हक़ीक़त में ज़िन्दा नबी होने के बारे में भी बड़ा सूक्ष्म इरशाद फ़रमाया है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम और स्थान को भी वर्णन फ़रमाया है। हमारे विरोधी हम पर यह एतराज़ करते हैं कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो को मान कर नऊज़-बिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और सम्मान को कम करते हैं। पाकिस्तान में हमारे विरोधी असैंबलियों में यह क़रारदादें पास करवा कर बड़ा गर्व कर रहे हैं कि देखो हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान के साथ, नाम के साथ ख़ातमन्नबय्यीन के शब्द को लिखना अनिवार्य क़रार देकर आप से मुहब्बत का और आप के मुक़ाम का कैसा ज़बरदस्त इज़हार किया है। अगर उनके दिल भी वास्तव में उनकी इस बात की गवाही देकर उन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण पर अनुकरण करने वाला बना रहे हैं तो अवश्य बड़ी अच्छी बात है लेकिन उनके अनुकरण ने तो उन्हें इस से कोसों दूर कर दिया है जो शिक्षा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी। अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में वापस जाकर इस शिक्षा और इस आदर्श को अपनाएं जो आप ने दी और जिस पर अनुकरण किया जाए तो मुसलमान मुसलमानों की गर्दन काटने वाला न हो। फिर ये लोग ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की बैअत में दौड़ते आएं।

ये समझते हैं कि उन्होंने ख़ातमन्नबय्यीन के शब्द को लिखना अनिवार्य क़रार देकर महान कारनामा अन्जाम दे दिया है और अहमदियों के रास्ते में कोई रोक खड़ी कर दी है। इन अक़्ल के अँधों को यह नहीं पिता कि अहमदी तो सबसे अधिक ख़ातमुल अम्बिया के स्थान को समझते हैं और यह हमें हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलातो वस्सलाम ने दिया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो के शब्दों में वह ताक़त है जिसके क़रीब भी ये लोग नहीं फटक सकते। आप के हर क्षण और अनुकरण में हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए इश्क़ तथा मुहब्बत का इज़हार है कि इन लोगों की सोचें भी वहां तक नहीं पहुंच सकतीं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बेशुमार उपदेश हैं, तहरीरें हैं, उपदेश हैं। इस समय मैं दो तीन उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करूँगा। अपने प्रादुर्भव के उद्देश्य और सिल्सिला की तरक़्क़ी के बारे में वर्णन फ़रमाते हुए आप विरोधियों को सम्बोधित करते हुए फरमाते हैं कि

"मेरे आने के दो उद्देश्य हैं। मुसलमानों के लिए यह कि वास्तविक तक़्वा और

पवित्रता पर क़ायम हो जाएं। वे ऐसे सच्चे मुसलमान हों जो मुसलमान के अर्थ में अल्लाह तआला ने चाहा है। पूर्ण आज्ञापालन के साथ अल्लाह तआला के आदेशों का अनुकरण करना और आप ने फ़रमाया दूसरा उद्देश्य क्या है? ईसाइयों के लिए सलीब का तोड़ना हो और उनका बनावटी ख़ुदा नज़र न आए। दुनिया उसको बिल्कुल भूल जाए और एक ख़ुदा की इबादत हो। फ़रमाया कि मेरे इन उद्देश्यों को देखकर ये लोग मेरा विरोद्ध क्यों करते हैं? उन्हें याद रखना चाहिए कि जो काम तबीयत के निफाक़ और दुनिया की गंदी ज़िन्दगी के साथ होंगे वे ख़ुद ही इस ज़हर से हलाक हो जाऐंगे। अगर मेरे दिल में कोई मुनाफ़क़त है, गंद है तो फिर ऐसे कामों में बरकत नहीं पड़ती बल्कि उनके परिणाम शीघ्र प्रकट हो जाते हैं। वे (फिर) हलाक हो जाऐंगे, ख़त्म हो जाऐंगे। फ़रमाया कि क्या झूठा कभी सफल हो सकता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ

(अल-मौमेनून 29)

कि अवश्य अल्लाह तआला उसे हिदायत नहीं देता जो सीमा से बढ़ा हुआ और कज़्ज़ाब हो, सख़्त झूठा हो।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ۔

फ़रमाया कि कज़्ज़ाब की हलाक़त के लिए उस का झूठ ही काफ़ी है। झूठा बन्दा है तो उस का झूठ उसको हलाक करने के लिए काफ़ी है लेकिन जो काम अल्लाह तआला के प्रताप और उस के रसूल की बरकतों के इज़हार और सबूत के लिए हों और ख़ुद अल्लाह तआला के अपने ही हाथ का लगाया हुआ पौधा हो। इसकी सुरक्षा तो ख़ुद फ़रिश्ते करते हैं। बंदों के काम नहीं हैं। जब अल्लाह तआला ने इस काम को शुरू किया है तो उस के फ़रिश्ते उस की सुरक्षा करते हैं। कौन है जो इसको नष्ट कर सके? चैलेंज है यह। जितना विरोध होता है उतना जमाअत अहमदिया की अल्लाह तआला के फ़ज़ल से तरक़्क़ी होती है। फ़रमाया कि याद रखो मेरा सिलसिला अगर केवल दुकानदारी है तो इस का नाम-निशान मिट जाएगा परन्तु अगर ख़ुदा तआला की तरफ़ से है और अवश्य उस की तरफ़ से है तो सारी दुनिया उस का विरोध करे यह बढ़ेगा और फैलेगा और फ़रिश्ते उस की सुरक्षा करेंगे। फ़रमाते हैं अगर एक व्यक्ति भी मेरे साथ न हो और कोई भी मदद न दे। तब भी मैं विश्वास रखता हूँ कि यह सिलसिला सफल होगा।

फ़रमाया कि विरोध की मैं परवाह नहीं करता, वह तो होती है। मैं इसको भी अपने सिलसिला की तरक़्क़ी के लिए अनिवार्य समझता हूँ। यह कभी नहीं हुआ कि ख़ुदा तआला का कोई मामूर और ख़लीफ़ा दुनिया में आया हो और लोगों ने चुपचाप उसे स्वीकार कर लिया हो। दुनिया की तो अजीब अवस्था है। इन्सान कैसा ही सिद्दीक़ तबीयत रखता हो परन्तु दूसरे उस का पीछा नहीं छोड़ते वे तो एतराज़ करते ही रहते हैं। फ़रमाया कि अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि हमारे सिलसिला की तरक़्क़ी आदत से बढ़ कर हो रही है।

आज हम देखते हैं कि 200 से अधिक देशों में मुख़्लसीन मौजूद हैं, आप की बैअत में आने वाले मौजूद हैं। जब आप ने वर्णन फ़रमाया उस समय सैंकड़ों में होते थे और आज तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से प्रतिवर्ष लाखों में बैअतें होती हैं। फ़रमाया कि इस सिलसिला की स्थापना का मूल उद्देश्य यही है कि लोग दुनिया के गंद से निकलें और सच्ची पवित्रता हासिल करें और फ़रिश्तों जैसी ज़िन्दगी व्यतीत करें। (उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 148 से149)

अत: आप अलैहिस्सलाम के इस उपदेश के अनुसार हमारी भी ज़िम्मेदारी है कि अपनी हालतों को सही इस्लामी शिक्षा के अनुसार ढालें और यही दुश्मन का मुँह-बंद करने का और दुश्मन पर विजय प्राप्त करने का असल तरीक़ा है।

फिर अपने और अपनी जमाअत के पूर्ण ईमान और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे आज्ञापालन का ऐलान करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैं सच कहता हूं और ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है। और वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन पर उसी प्रकार ईमान लाती है जिस प्रकार से एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए। मैं एक कण भर भी इस्लाम से बाहर क़दम रखना मौत का कारण विश्वास करता हूं और मेरा यही मत है कि कोई व्यक्ति जितने लाभ और बरकतें प्राप्त कर सकता है और जितना ख़ुदा का सानिध्य पा सकता है वह केवल और केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आज्ञापालन तथा पूर्ण प्रेम से पा सकता है अन्यथा नहीं। आपके अतिरिक्त अब नेकी का कोई मार्ग नहीं। हां यह भी सच है कि मैं कदापि विश्वास नहीं करता कि मसीह अलैहिस्सलाम इसी शरीर के साथ जीवित आकाश पर गए हों और अब तक जीवित क़ायम हों इसलिए कि इस मामले को मान कर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बड़ा अपमान और निन्दा होती है। मैं एक पल के लिए इस निन्दा को सहन नहीं कर सकता। सब को मालूम है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 63 वर्ष की आयु में मृत्यु पाई और पवित्र मदीना में आप का रौज़: (मज़ार) मौजूद है। हर वर्ष वहां हज़ारों-लाखों हाजी भी जाते हैं। अब यदि मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में मृत्यु का विश्वास करना या मृत्यु को उनकी ओर सम्बद्ध करना अनादर है तो फिर मैं कहता हूं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में यह धृष्टता और अनादर क्यों विश्वास कर लिया जाता है? परन्तु तुम बड़ी ख़ुशी से कह देते हो कि आप ने मृत्यु पाई। मौलूद पढ़ने वाले बड़े सुन्दर स्वर में मृत्यु की घटनाओं का वर्णन करते हैं और काफ़िरों के मुक़ाबला में भी तुम बड़ी प्रफुल्लता से स्वीकार कर लेते हो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मृत्यु पाई। फिर मैं नहीं समझता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर क्या पत्थर पड़ता है कि नीली-पीली आंखें कर लेते हो। हमें भी अफसोस न होता यदि तुम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए भी मृत्यु का शब्द सुनकर ऐसे आंसू बहाते। परन्तु अफ़सोस तो यह है कि ख़ातमन्नबिय्यीन और सर्वर-ए-आलम के बारे में तो तुम बड़ी प्रसन्नता से मृत्यु स्वीकार कर लो और उस व्यक्ति के बारे में जो अपने आप को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जूती का तस्मा खोलने के भी योग्य नहीं बताता जीवित विश्वास करते हो और उसके लिए मृत्यु का शब्द मुंह से निकाला और तुम्हें क्रोध आ जाता है। यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब तक जीवित रहते तो हानि न थी, इसलिए कि आप वह महान हिदायत लेकर आए थे जिसका उदाहरण दुनिया में नहीं पाया जाता और आपने वे क्रियात्मक हालतें दिखाईं कि आदम से लेकर इस समय तक कोई उनका नमूना और उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता। मैं तुम को सच-सच कहता हूं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व की जितनी आवश्यकता दुनिया तथा मुसलमानों को थी उतनी आवश्यकता मसीह के अस्तित्व की नहीं थी फिर आपका पवित्र अस्तित्व वह मुबारक अस्तित्व है कि जब आपने मृत्यु पाई तो सहाबा की यह हालत थी कि वे दीवाने हो गए, यहां तक कि हज़रत उमर[रज़ि.] ने म्यान से तलवार निकाल ली और कहा कि यदि कोई आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुर्दा कहेगा तो मैं उस का सर अलग कर दूंगा। इस जोश की हालत में अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] को एक विशेष प्रकाश और प्रतिभा प्रदान की। उन्होंने सब को एकत्र किया और ख़ुत्बा पढ़ा -

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ (आले इमरान-145)

अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रसूल हैं और आप से पहले जितने रसूल आए वे सब मृत्यु पा चुके। अब आप विचार करें और सोच कर बताएं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि.] ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर यह आयत क्यों पढ़ी थी और इस से आप का क्या उद्देश्य और आशय था? और फिर ऐसी हालत में कि सब सहाबा मौजूद थे। मैं निसन्देह कहता हूं और आप इन्कार नहीं कर सकते कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के कारण सहाबा[रज़ि.] के दिलों पर बड़ा आघात था और उसको असमय और समय से पूर्व समझते थे। वे पसन्द नहीं कर सके कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु की ख़बर सुनें। ऐसी हालत में कि हज़रत उमर [रज़ि.] जैसा महान सहाबी इस जोश की हालत में हो उन का क्रोध कम नहीं हो सकता सिवाए इसके कि यह आयत उनकी सांत्वना का कारण होती। यदि उन्हें यह मालूम होता या यह विश्वास होता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं तो वे तो जीवित ही मर जाते। वे तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बड़े प्रेमी थे तथा आप के जीवित रहने के अतिरिक्त किसी अन्य के जीवित रहने को सहन ही न कर सकते थे। फिर क्योंकर अपनी आंखों के सामने आपको मृत्यु प्राप्त देखते और मसीह को जीवित विश्वास करते। अर्थात

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

जब हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने ख़ुत्बा पढ़ा तो उन का जोश कम हो गया। उस समय सहाबा [रज़ि.] मदीना की गलियों में यह आयत पढ़ते फिरते थे और वे समझते थे कि जैसे यह आयत आज ही उतरी है। उस समय हस्सान बिन साबित [रज़ि.] ने एक शोक नज़्म लिखी जिस में उन्होंने कहा -

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِیْ فَعَمِیَ عَلَیْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَآءَ بَعْدَكَ فَلْیَمُتْ فَعَلَیْكَ كُنْتُ أُحَاذِرُ

(हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! तू मेरी आँख की पुतली था तेरे जाने से मेरी आँख मानो अंधी हो गई, अब तेरे बाद जो चाहे मरे, मुझे तो तेरी ही मौत का डर था-अनुवादक)

चूंकि उपरोक्त आयत ने बता दिया था कि सब मर गए इसलिए हस्सान रज़ि. ने भी कह दिया कि अब किसी की मृत्यु की परवाह नहीं। निसन्देह समझो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तुलना में किसी का जीवन सहाबा [रज़ि.] पर बहुत भारी था और व उसे सहन नहीं कर सकते थे। इस प्रकार से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर यह पहला इज्माअ था जो दुनिया में हुआ और इस में हज़रत मसीह की मृत्यु का भी पूर्ण रूप से फ़ैसला हो चुका था।

(उद्धरित लैक्चर लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 260 से 262)
(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 224-227)

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम तथा स्थान का वर्णन करते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"वह इन्सान जिसने अपने अस्तित्व से, अपनी विशेषताओं से, अपने कार्यों से और अपनी रूहानी एवं पवित्र शक्तियों के शक्तिशाली दरिया से पूर्ण कमाल का नमूना ज्ञान, कर्म, सच्चाई और दृढ़ता की दृष्टि से दिखलाया और पूर्ण इन्सान (इन्सान-ए-कामिल) कहलाया ख़ुदा तआला की क़सम वह मसीह इब्ने मरयम नहीं है। मसीह तो केवल एक मामूली सा नबी था। हाँ वह भी करोड़ों सानिध्य प्राप्त (मुकर्रबों) में से एक था। परन्तु उस सामन्य गिरोह में से एक था और मामूली था इस से अधिक न था। अत: इस से देख लो कि इंजील में लिखा है कि वह यह्या नबी का मुरीद था और शिष्यों की तरह बपतस्मा पाया।

वह केवल एक क़ौम विशेष के लिए आया और अफ़सोस कि उसके अस्तित्व से संसार को कोई भी रूहानी लाभ न पहुंच सका। संसार में एक ऐसी नबुव्वत का नमूना छोड़ गया जिसकी हानि उसके लाभ से अधिक सिद्ध हुई। उसके आने से आज़मायश और उपद्रव बढ़ गया और संसार के एक बड़े भाग ने तबाही का भाग ले लिया। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह सच्चा नबी तथा ख़ुदा तआला के सानिध्य प्राप्त (लोगों) में से था। किन्तु वह इन्सान जो सर्वाधिक पूर्ण और कामिल इन्सान था तथा कामिल नबी था और कामिल (पूर्ण) बरकतों के साथ आया, जिस से रूहानी अवतरण और प्रलय में मुर्दों का जी उठने के कारण पहली क़यामत प्रकट हुई और उस के आने से एक मरा हुआ संसार जीवित हो गया। वह मुबारक नबी हज़रत ख़ातमुल-अंबिया इमामुल अस्फिया खतमुल मुर्सलीन फ़ख़रुन्नबिय्यीन जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। हे प्यारे ख़ुदा! इस प्यारे नबी पर वह रहमत और दरूद भेज जो संसार के प्रारंभ से तूने किसी पर न भेजा हो। यदि यह महान नबी संसार में न आता तो फिर जितने छोटे-छोटे नबी आए जैसे कि यूनुस, अय्यूब, मसीह इब्ने मरयम, मलाकी यह्या और ज़करिया इत्यादि-इत्यादि उनकी सच्चाई पर हमारे पास कोई भी प्रमाण नहीं था यद्यपि सब सानिध्य प्राप्त (मुक़र्रब), रूपवान और ख़ुदा तआला के प्रिय थे। यह उस नबी का उपकार है कि ये लोग भी संसार में सच्चे समझे गए।

اللھم صل وسلم وبارك علیه وآله واصحابه اجمعین

(इत्मामुल हुज्जत , रुहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 308)

अल्लाह तआला हमें हमेशा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम तथा स्तर की वास्तविक समझ प्रदान करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजते चले जाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और अल्लाह तआला के हुज़ूर पहले से बढ़कर हम झुकने वाले हों। और यही तरीक़ा है, हम अपने अनुकरण से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत को प्रमाणित करेंगे और अपने दिलों में उसे बिठाएँगे तो हम विरोधियों के विरोध का जवाब दे सकेंगे अर्थात हमारी व्यावहारिक अवस्थाएं इन विरोधियों के विरोध का जवाब देंगी। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक़ दे।

(अल-फ़ज़ल इंटरनैशनल 21अगस्त 2020 ई पृष्ठ 05 से 07)

☆ ☆ ☆ ☆

..... पृष्ठ 1 का शेष

वह हर एक काम ख़ुद कर सकता है। उसको किसी की मदद की हरगिज़ ज़रूरत नहीं। परन्तु बावजूद उस के कि इस्लाम की बुनियाद لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पर रखी गई थी आज मुसलमानों में इस क़दर शिर्क पाया जाता है कि अन्य क़ौमों में इस की तुलना बहुत कम है । मुसलमान क़ब्रों पर बिना किसी प्रकार की शर्म के इस तरह सिज्दा करते हैं कि ख़ुदा के आगे सिज्दा करने वालों में और उनमें कण मात्र भी अन्तर नहीं रह जाता। मुझे इस बात पर हमेशा आश्चर्य होता था कि क्या कोई मुसलमान भी क़ब्र पर सिज्दा कर सकता है? और मैं बावजूद गवाहियों के इस पर विश्वास नहीं करता था। परन्तु एक बार जब हम कुछ आदमी हिन्दुस्तान में इस्लामी मदरस्से देखने के लिए गए तो लखनऊ में फ़रंगी महल का मदरस्सा देखकर मेरा दिल बहुत ख़ुश हुआ। अच्छे योग्य और आलिम उस्ताद थे। होशियार और चालाक़ छात्र मालूम होते थे लेकिन इस मदरसों और दूसरे मदरसों को देखकर जब हम शाम को वापस अपने मकान की तरफ़ आ रहे थे तो एक क़ब्र के सामने जो आदमी पूरा-पूरा सिज्दा कर रहा था वह फ़रंगी महल के मदरसा का एक उस्ताद था। मुझे उसको देखकर आश्चर्य हुआ कि उसने इल्म पढ़ कर भी इस को कुछ महत्व न दिया। और क़ब्र पर सिज्दा करने लग गया। मुसलमानों को अल्लाह तआला ने इन आयतों में इसी लिए यहूद का वर्णन सुनाया था कि एक दिन तुम भी इसी तरह करने लगोगे।

(तफ़सीर कबीर, भाग 2, पृष्ठ 226 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

सदर अन्जुमन अहमदिया क़ादियान के विभाग तज़ईन में सेवा करने के इच्छुक ध्यान दें।

तज़ईन विभाग क़ादियान में नई मन्ज़ूर की गई अम्रीकन बेस्ड ग्रास कट्टर मशीन के लिए ड्राईवर की असामी भरी जानी है जो दोस्त बतौर ड्राईवर इस असामी पर सेवा करने के इच्छुक हों वे अपनी दरख़ास्तें दो महीने के अन्दर नज़ारत दीवान सदर अन्जुमन अहमदिया में भिजवा सकते हैं।

शर्तें निम्नलिखित हैं

(1)उम्मीदवार के पास ड्राइविंग लाईसैंस और ड्राइविंग का अनुभव होना ज़रूरी है।

(2)उम्मीदवार थोड़ा बहुत टेक्नीकल काम भी जानता हो ताकि आवश्यकता अनुसार इस कट्टर मशीन को ठीक भी कर सके। (3) उम्मीदवार ट्रैक्टर ट्राली चलाना जानता हो। (4)उम्मीदवार आज्ञाकारी हो और ज़रूरत के समय दूसरे कामों के लिए भी तैयार हो।

(5)उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है।

6)उम्मीदवार को बर्थ सर्टीफ़िकेट पेश करना ज़रूरी होगा।

(7)वही उम्मीदवार ड्राइवर की सेवा के लिए लिए जाएंगे जो इंटरव्यू बोर्ड तक़र्रुर कारकुनान में सफल होंगे। (8)वही ड्राइवर सेवा के लिए लिए जाऐंगे जो नूर हस्पताल क़ादियान से मैडीकल फ़िटनैस सर्टीफ़िकेट के अनुसार सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे। (9)उम्मीदवार ड्राइवर को दर्जा दोयम के बराबर अलाउनस तथा अन्य सुविधाएं दी जाएँगी। (10) उम्मीदवार को कादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अपने से करना होगा। (11)अगर उम्मीदवार की स्लेक्शन होती है तो क़ादियान में अपने रहने का प्रबन्ध ख़ुद करना होगा।

नोट: उपरोक्त निवेदन फ़ार्म नज़ारत दीवान सदर अन्जुमन अहमदिया क़ादियान से प्राप्त कर सकते हैं। दरख़ास्त फ़ार्म नियम के अनुसार भर कर आने पर उस के अनुसार कार्रवाई होगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

(नाज़िर दीवान क़ादियान)

(Ph) 01872-501130 (Mob) 9877138347, 9646351280

e-mail: diwan@qadian.in

☆ ☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 3 September 2020 Issue No.36

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव और अहमदिया मुस्लिम जमाअत का परिचय

क़ुरआन मजीद , हदीसों एवं इसी तरह उम्मत के बुज़ुर्गों की किताबों में एक अल्लाह की तरफ से भेजे जाने वाले मामूर के बारे में बहुत सी भविष्यवाणियां मौजूद हैं, इनमें उस के प्रादुर्भव के ज़माना की जो निशानियां बताई गई हैं उनके अध्ययन से पता चलता है कि, इस महान रुहानी इन्सान को चौदहवीं सदी हिजरी के आरम्भ में आना था। क्योंकि उस के प्रादुर्भाव का उद्देश्य समस्त मानव जाति का आध्यात्मिक सुधार करना था इसी कारण से उस के विभिन्न गुणवाचक नाम धार्मिक पुस्तकों में वर्णित हैं इस्लामी पुस्तकों में उसे इमाम महदी ,मसीह मौऊद ,मुजद्दिद आखिरुज़्ज़मान, उम्मती नबी इत्यादि नामों से वर्णित किया गया है। इस्लाम धर्म के संस्थापक सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट रूप से समझाया कि ये सब गुणवाचक नाम एक ही अल्लाह तआला की तरफ से भेजे हुए रसूल के होंगे, प्रत्येक नाम के अलग-अलग इन्सान नहीं आएँगे, महदी और मसीह के बारे में स्पष्ट रूप में फ़रमाया:

(1) وَلَا الْمَهْدِيُّ إِلَّا عِيسَى بْنُ مَرْيَمَ

(सुनन इब्ने माजा किताबुल फ़ितन बाब शिद्दतुज़मान)

अनुवाद : केवल(प्रतिरूप)ईसा इब्ने मरियम के और कोई महदी नहीं है।

(2) كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ فِيكُمُ ابْنُ مَرْيَمَ فَأَمَّكُمْ مِنْكُمْ

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान बाब नुज़ूल ऐसी इब्ने मरियम)

अनुवाद: हे मुसलमानों तुम्हारा क्या हाल होगा जब (प्रतिरूप)इब्ने मरियम तुम में नाज़िल होंगे और वही तुम्हारे इमाम (महदी)होंगे।

फिर इमाम महदी की एक निशानी यह बताई कि वह हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ी अल्लाह अन्हो की क़ौम फ़ारस की नस्ल में से होंगे। हदीस के शब्द यह हैं।

وَفِينَا سَلْمَانُ الْفَارِسِيُّ وَضَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عليه وسلام يَدَهُ عَلَى سَلْمَانَ ثُمَّ قَالَ لَوْ كَانَ الْإِيمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهُ رِجَالٌ أَوْ رَجُلٌ مِنْ هَؤُلَاءِ

(सही अल-बुख़ारी किताबुत्फसीर सूरत अल-जुमा)

अनुवाद: रिवायत करने वाला वर्णन करते हैं कि हम में हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ी अल्लाह अन्हो मौजूद थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन पर हाथ रखा फिर फ़रमाया ईमान चाहे किसी समय सुरय्या (सितारे) तक भी पहुंच गया तो उन में कुछ मर्द या ,एक उसे वापस ले आएगा।

पाठकों की सुचना के लिए वर्णन किया जाता है कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी महदी मौऊद व मसीह मौऊद फ़ारस की नस्ल में से हैं और आप का वंश सन 1530 ई में हिन्दुस्तान आया था और उन्होंने ही क़ादियान की नींव रखी थी एक दूसरी हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूचित फ़रमाया कि एक ज़माना ऐसा आएगा जब لَا يَبْقَى مِنَ الْإِسْلَامِ إِلَّا اسْمُهُ अनुवाद इस्लाम में से इस के नाम के सिवा कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा। पहली हदीस में ईमान उठने का वर्णन है, और दूसरी में इस्लाम के केवल नाम मात्र रह जाने की ख़बर दी गई है। क़ुरआन मजीद और हदीसों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिस युग में मुसलमानों ने ईमान और इस्लाम से दूर चले जाना था अल्लाह तआला ने इसी युग में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की प्रादुर्भाव के द्वारा वास्तविक ईमान तथा इस्लाम के तलाश करने वाले मुसलमानों के दिलों में इन दोनों को पुन: स्थापित करना था। याद रहे कि क़ुरआन मजीद की आयतों की एक से अधिक तफ़सीरें होती हैं जिसका विभिन्न युगों से सम्बन्ध है।

निम्नलिखित आयत में अल्लाह तआला ने मोमिनों को ईमान के नवीनीकरण की ताकीद फ़रमाई है फ़रमाया

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا

(सूर अन्निसा,सूरत नम्बर 4 आयत नम्बर137)

विवाह शादी के अवसर पर धर्म को प्राथमिकता देने की शिक्षा

"हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया किसी औरत से निकाह करने की चार ही बुनियादें हो सकती हैं या तो उस के माल के कारण से या उस के ख़ानदान के कारण से या उस की सुन्दरता के कारण से या उस की नेकी के कारण से, परन्तु तू धार्मिक औरत को प्राथमिकता दे अल्लाह तेरा भला करे।" (बुख़ारी ,किताबुन्निकाह)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"शादी विवाह की रस्म जो है यह भी एक धर्म ही है तभी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि जब तुम शादी करने की सोचो तो प्रत्येक वस्तु पर प्राथमिकता उस लड़की को दो, उस रिश्ते को दो, जिस में धर्म अधिक हो इस लिए यह कहना कि शादी विवाह केवल ख़ुशी का इज़हार है ख़ुशी है और अपना व्यक्तिगत काम है। यह ग़लत है। यह ठीक है जैसा कि पहले भी में कह आया हूँ इस्लाम ने यह नहीं कहा कि दुनिया से विरक्त हो जाओ और बिल्कुल एक तरफ़ लग जाओ। लेकिन इस्लाम यह भी नहीं कहता कि दुनिया में इतने खोए जाओ कि धर्म का होश ही न रहे। अगर शादी विवाह केवल शोर-शराबा और रौनक और गाना बजाना होता तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निकाह के ख़ुत्बा में अल्लाह तआला की प्रशंसा के साथ शुरू करके और फिर तक़्वा धारण करने की तरफ़ इतना ध्यान दिलाया है ध्यान न दिलाते बल्कि शादी की हर नसीहत और हर हिदायत की बुनियाद ही तक़्वा पर है।"(ख़ुत्बा जुमा फ़र्मूदा 25 नवम्बर 2005 ई) **(नज़ारत इस्लाह व इरशाद) मर्कज़िया कादियान**

प्रश्न पैदा होता है कि इस आयत में मोमिनों (अर्थात जो लोग ईमान लाए हुए हैं) उनको ईमान लाने की ताकीद क्यों की जा रही है

इस का जवाब यह है कि इस आयत की बहुत सी तफ़सीरों में से एक ये है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूसरे प्रादुर्भाव का द्योतक हज़रत इमाम महदी (अर्थात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम),मुस्लिम जमाअत अहमदिया का क़ियाम फ़रमाएं तो ज़ाहिर में मुसलमान और मोमिन कहलाने वालों को भी, दोबारा बैअत करनी होगी।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम की तरफ़ से महदवियत तथा मसीहीयत के दावा की घोषणा

ऊपर वर्णित भविष्यवाणियों के अनुसार अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम (1835 ई-1908 ई)इमाम महदी मसीह मौऊद तथा उम्मती नबी बना कर भेजा उन्होंने अल्लाह तआला के हुक्म से यह ऐलान फ़रमाया कि فَأَنَا ذَلِكَ النُّورُ - وَالْمُجَدِّدُ الْمَأْمُورُ - وَالْعَبْدُ الْمَنْصُورُ - وَالْمَهْدِيُّ الْمَعْهُودُ - وَالْمَسِيحُ الْمَوْعُودُ (ख़ुत्बा इल्हामिया रुहानी ख़ज़ायन भाग 16 पृष्ठ 50)

(अनुवाद मैं वह नूर हूँ और वह मुजद्दिद हूँ जो ख़ुदा तआला के आदेश से आया हूँ मैं अल्लाह की तरफ़ से सहायता प्राप्त बन्दा हूँ और वह महदी हूँ जिसका आना निर्धारित हो चुका है, वह मसीह हूँ जिसके आने का वादा था।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम ने ऐलान फ़रमाया

(1) मैं मुसलमानों के लिए महदी अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रतिरूप हूँ, और ईसाइयों के लिए मसीह मौऊद अर्थात हज़रत मसीह नासरी का प्रतिरूप बन कर आया हूँ। (सीरतुल महदी हिस्सा 3 पृष्ठ 541 रिवायत नम्बर 554)

(2)अत: आने वाले का नाम जो महदी रखा गया इस में यह इशारा है कि वह आने वाला धर्म का ज्ञान ख़ुदा से ही प्राप्त करेगा और क़ुरआन मजीद और हदीस में किसी उस्ताद का शागिर्द नहीं होगा अत: मैं अल्लाह तआला की कसम खाकर कह सकता हूँ कि मेरा हाल, यही हाल है। अत: यही महदवयित है जो नबुव्वत मुहम्मदिया की प्रणाली पर मुझे प्राप्त हुई है।

(अय्यामुस्सुलह रुहानी ख़ज़ायन भाग 14 पृष्ठ 394-395)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad